बाब 10 : अगर कोई (किसी ज़ालिम के डर से) जबरन बीवी को अपनी बहन कह दे

١٠- باب إِذَا قَالَ لِامْرَأَتِهِ وَهُوَ مُكْرَهٌ : هَذِهِ أُخْتِي، فَلاَ شَيْءَ عَلَيْهِ

قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِسَارَةَ هَذِهِ أُخْتِي، وَذَلِكَ فِي ذَاتِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ)).

तो कुछ नुक़्सान न होगा न उस औरत पर तलाक़ पड़ेगी न ज़िहार का कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपनी बीवी सारा को कहा कि ये मेरी बहन है (या'नी अल्लाह की राह में दीनी बहन)

बाब 11 : ज़बरदस्ती और जबरन तलाक़ देने का हुक्म

١١- باب الطَّلاَقِ فِي الإِغْلاَقِ وَالْمُكْرَهِ وَالسَّكْرَانِ وَالْمَجْنُونِ وَأَمْرِهِمَا وَالْغَلَطِ وَالنِّسْيَانِ فِي الطَّلاَقِ

وَالشِّرْكِ وَغَيْرِهِ، لِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((الأَعْمَالُ بِالنِّيَّةِ، وَلِكُلِّ امْرِىءٍ مَا نَوَى)). وَتَلاَ الشَّعْبِيُّ ﴿لاَ تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا﴾ وَمَا لاَ يَجُوزُ مِنْ إِقْرَارِ الْمُوَسْوِسِ. وَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لِلَّذِي أَقَرَّ عَلَى نَفْسِهِ أَبِكَ جُنُونٌ؟)) وَقَالَ عَلِيٌّ بَقَرَ حَمْزَةُ خَوَاصِرَ شَارِفَيَّ فَطَفِقَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَلُومُ حَمْزَةَ، فَإِذَا حَمْزَةُ قَدْ ثَمِلَ مُحْمَرَّةٌ عَيْنَاهُ. ثُمَّ قَالَ حَمْزَةُ : هَلْ أَنْتُمْ إِلاَّ عَبِيدٌ لأَبِي؟ فَعَرَفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَدْ ثَمِلَ، فَخَرَجَ وَخَرَجْنَا مَعَهُ. وَقَالَ عُثْمَانُ لَيْسَ لِمَجْنُونٍ وَلاَ لِسَكْرَانَ طَلاَقٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: طَلاَقُ السَّكْرَانِ وَالْمُسْتَكْرَهِ لَيْسَ بِجَائِزٍ. وَقَالَ عُقْبَةُ بْنُ عَامِرٍ. لاَ يَجُوزُ

इसी तरह नशा या जुनून में दोनों का हुक्म एक होना, इसी तरह भूल या चूक से तलाक़ देना या भूल चूक से कोई शिर्क (कुछ ने यहाँ लफ़्ज़ वशशक नक़ल किया है जो ज़्यादा क़रीने क़यास है) का हुक्म निकाल बैठना या शिर्क का कोई काम करना क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तमाम काम निय्यत से सहीह होते हैं और हर एक आदमी को वही मिलेगा जो निय्यत करे और आमिर शअबी ने ये आयत पढ़ी रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन्नसीना औ अख़्तअना और इस बाब मे ये भी बयान है कि वसवासी और मज्नून आदमी का इक़रार सहीह नहीं है क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने उस शख़्स से फ़र्माया जो ज़िना का इक़रार कर रहा था, कहीं तुझको जुनून तो नहीं है और हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा जनाब अमीर हम्ज़ा ने मेरी ऊँटनियों के पेट फाड़ डाले (उनके गोश्त के कबाब बनाए) आँहज़रत (ﷺ) ने उनको मलामत करनी शुरू की फिर आपने देखा कि वो नशे मे चूर हैं, उनकी आँखें सुर्ख़ हैं। उन्होंने (नशे की हालत में) ये जवाब दिया तुम सब क्या मेरे बाप के गुलाम नहीं हो? आँहज़रत (ﷺ) ने पहचान लिया कि वो बिल्कुल नशे में चूर हैं, आप निकलकर चले आए, हम भी आपके साथ निकल खड़े हुए। और उष्मान (रज़ि.) ने कहा मज्नून और नशे वाले की तलाक़ नहीं पड़ेगी (उसे इब्ने अबी शैबा ने वस्ल किया) और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा नशे और ज़बरदस्ती की तलाक़ नहीं पड़ेगी (इसको सईद बिन मंसूर और इब्ने अबी शैबा ने वस्ल किया) और उक़्बा बिन आमिर जहनी सहाबी (रज़ि.) ने कहा अगर तलाक़ का वस्वसा दिल में आए तो जब तक ज़ुबान से न निकाले तलाक़ नहीं पड़ेगी और अता बिन

(रज़ि.) के शौहर एक हब्शी ग़ुलाम थे। उनका मुग़ीष़ नाम था, वो बनी फ़लाँ के ग़ुलाम थे। जैसे वो मंज़र अब भी मेरी आँखों में है कि वो मदीना की गलियों में बरीरह (रज़ि.) के पीछे पीछे फिर रहे हैं। (राजेअ़ : 5280)

زَوْجُ بَرِيرَةَ عَبْدًا أَسْوَدَ يُقَالُ لَهُ: مُغِيثٌ، عَبْدًا لِبَنِي فُلاَنٍ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ يَطُوفُ وَرَاءَهَا فِي سِكَكِ الْمَدِينَةِ.[راجع: ٥٢٨٠

बाब 16 : बरीरह (रज़ि.) के शौहर के बारे में नबी करीम (ﷺ) का सिफ़ारिश करना

١٦- باب شَفَاعَةِ النَّبِيِّ ﷺ فِي زَوْجِ بَرِيرَةَ

5283. हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने ख़बर दी, कहा हमसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि बरीरह (रज़ि.) के शौहर ग़ुलाम थे और उनका नाम मुग़ीष़ था। गोया मैं इस वक़्त उसको देख रहा हूँ जब वो बरीरह (रज़ि.) के पीछे-पीछे रोते हुए फिर रहे थे और आंसुओं से उनकी दाढ़ी तर हो रही थी। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने अ़ब्बास (रज़ि.) से फ़र्माया, अ़ब्बास! क्या तुम्हें मुग़ीष़ की बरीरह से मुहब्बत और बरीरह की मुग़ीष़ से नफ़रत पर हैरत नहीं हुई? आख़िर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने बरीरह (रज़ि.) से फ़र्माया काश! तुम उसके बारे में अपना फ़ैसला बदल देतीं। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आप मुझे उसका हुक्म फ़र्मा रहे हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मैं स़िर्फ़ सिफ़ारिश कर रहा हूँ। उन्होंने इस पर कहा कि मुझे मुग़ीष़ के पास रहने की ख़्वाहिश नहीं है। (राजेअ़ : 5280)

٥٢٨٣- حدثني مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ زَوْجَ بَرِيرَةَ كَانَ عَبْدًا يُقَالُ لَهُ مُغِيثٌ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ يَطُوفُ خَلْفَهَا يَبْكِي وَدُمُوعُهُ تَسِيلُ عَلَى لِحْيَتِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِعَبَّاسٍ: ((يَا عَبَّاسُ أَلاَ تَعْجَبُ مِنْ حُبِّ مُغِيثٍ بَرِيرَةَ، وَمِنْ بُغْضِ بَرِيرَةَ مُغِيثًا)). فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((لَوْ رَاجَعْتِيهِ)) قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، تَأْمُرُنِي. قَالَ: ((إِنَّمَا أَنَا أَشْفَعُ)). قَالَتْ لاَ حَاجَةَ لِي فيه.

[راجع: ٥٢٨٠]

बाब : 17

١٧- باب

5284. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें हकम ने, उन्हें इब्राहीम नख़ई ने, उन्हें अस्वद ने कि आइशा (रज़ि.) ने बरीरह (रज़ि.) को ख़रीदने का इरादा किया लेकिन उनके मालिकों ने कहा कि वो इसी शर्त पर उन्हें बेच सकते हैं कि बरीरह का तर्का हम लें और उनके साथ विलाअ (आज़ादी के बाद) उन्हीं से क़ायम हो। आइशा (रज़ि.) ने जब उसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि उन्हें ख़रीदकर आज़ाद कर दो तर्का तो उसी को मिलेगा जो लौण्डी ग़ुलाम को आज़ाद करे और विलाअ भी उसी के साथ क़ायम हो सकती है जो आज़ाद करे और नबी करीम (ﷺ) के सामने गोश्त लाया गया फिर

٥٢٨٤- حدثنا عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ أَنَّ عَائِشَةَ أَرَادَتْ أَنْ تَشْتَرِيَ بَرِيرَةَ فَأَبَى مَوَالِيهَا إِلاَّ أَنْ يَشْتَرِطُوا الْوَلاَءَ، فَذَكَرَتْ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ:((اشْتَرِيهَا وَأَعْتِقِيهَا، فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). وَأُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِلَحْمٍ، فَقِيلَ: إِنَّ هَذَا مَا تُصُدِّقَ عَلَى

قَذَفَ امْرَأَتَهُ فَأَحْلَفَهُمَا النَّبِيُّ ﷺ ثُمَّ فَرَّقَ بَيْنَهُمَا. [راجع: ٤٧٤٨]

मियाँ–बीवी से क़सम खिलवाई और फिर दोनों में जुदाई करा दी। (राजेअ : 4748)

٢٨- باب يَبْدَأُ الرَّجُلُ بِالتَّلاَعُنِ

बाब : 28 लिआन की इब्तिदा मर्द करेगा (फिर औरत)

٥٣٠٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانَ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ هِلاَلَ بْنَ أُمَيَّةَ قَذَفَ امْرَأَتَهُ فَجَاءَ فَشَهِدَ وَالنَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ اللهَ يَعْلَمُ أَنَّ أَحَدَكُمَا كَاذِبٌ، فَهَلْ مِنْكُمَا تَائِبٌ؟)) ثُمَّ قَامَتْ فَشَهِدَتْ.[راجع: ٢٦٧١]

5307. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अदी ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन हस्सान ने, कहा कि हमसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि हिलाल बिन उमय्या ने अपनी बीवी पर तोहमत लगाई, फिर वो आए और गवाही दी। नबी करीम (ﷺ) ने उस वक़्त फ़र्माया, अल्लाह ख़ूब जानता है कि तुममें से एक झूठा है, तो क्या तुममें से कोई (जो वाक़ई गुनाह का मुर्तकिब हुआ है) रुजूअ करेगा? उसके बाद उनकी बीवी खड़ी हुईं और उन्होंने गवाही दी। अपने बरी होने की। (राजेअ : 2671)

तश्रीह : बाब और हदीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है। हदीष़ से ये निकला कि पहले मर्द से गवाही लेनी चाहिये। इमाम शाफ़िई और अकष़र उलमा का यही क़ौल है। अगर औरत से पहले गवाही ली जाए तब भी लिआन दुरुस्त हो जाएगा। कहते हैं उस औरत ने पाँचवीं बार में ज़रा ताम्मुल किया। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा हम समझे कि वो अपने क़सूर का इक़रार करेगी मगर फिर कहने लगी मैं अपनी क़ौम को सारी उम्र के लिये ज़लील नहीं कर सकती और उसने पाँचवीं बार भी क़सम खाकर लिआन कर दिया।

٢٩- باب اللِّعَانِ، وَمَنْ طَلَّقَ بَعْدَ اللِّعَانِ

बाब 29 : लिआन और लिआन के बाद तलाक़ देने का बयान

٥٣٠٨- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ السَّاعِدِيَّ أَخْبَرَهُ أَنَّ عُوَيْمِرًا الْعَجْلاَنِيَّ جَاءَ إِلَى عَاصِمِ بْنِ عَدِيٍّ الأَنْصَارِيِّ فَقَالَ لَهُ: يَا عَاصِمُ أَرَأَيْتَ رَجُلاً وَجَدَ مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلاً أَيَقْتُلُهُ فَتَقْتُلُونَهُ، أَمْ كَيْفَ يَفْعَلُ؟ سَلْ لِي يَا عَاصِمُ عَنْ ذَلِكَ، فَسَأَلَ عَاصِمٌ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ذَلِكَ، فَكَرِهَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَسَائِلَ وَعَابَهَا حَتَّى كَبُرَ عَلَى عَاصِمٍ مَا سَمِعَ مِنْ

5308. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उन्हें सहल बिन सअद साएदी ने ख़बर दी कि उवैमिर अज्लानी, आसिम बिन अदी अंसारी के पास आए और उनसे कहा कि आसिम आपका क्या ख़याल है कि एक शख़्स अगर अपनी बीवी के साथ किसी ग़ैर मर्द को देखे तो क्या उसे क़त्ल कर देगा लेकिन फिर आप लोग उसे भी क़त्ल कर देंगे। आख़िर उसे क्या करना चाहिये? आसिम, मेरे लिये ये मसला पूछ दो। चुनाँचे आसिम (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ये मसला पूछा। आँहज़रत (ﷺ) ने इस तरह के सवालात को नापसंद फ़र्माया और इज़्हारे नागवारी किया। आसिम (रज़ि.) ने इस सिलसिले में आँहज़रत (ﷺ) से जो कुछ सुना उसका बहुत अष़र लिया। फिर जब घर वापस आए

हाँक ले जाना जाइज़ दुरुस्त है।

5492. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्हें अ़म्र ने ख़बर दी, उनसे अबुन् नज़्र ने बयान किया, उनसे क़तादा के ग़ुलाम नाफ़ेअ़ और तवामा के ग़ुलाम अबू सालेह़ ने कि उन्होंने ह़ज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं मक्का और मदीना के दरम्यान रास्ते में नबी करीम (ﷺ) के साथ था। दूसरे लोग तो एह़राम बाँधे हुए थे लेकिन मैं एह़राम में नहीं था और एक घोड़े पर सवार था। मैं पहाड़ों पर चढ़ने का बड़ा आ़दी था फिर अचानक मैंने देखा कि लोग ललचाई हुई नज़रों से कोई चीज़ देख रहे हैं। मैंने जो देखा तो एक गोरख़र था। मैंने उनसे पूछा कि ये क्या है? लोगों ने कहा हमें मा'लूम नहीं! मैंने कहा कि ये तो गोरख़र है। लोगों ने कहा कि जो तुमने देखा है वही है। मैं अपना कोड़ा भूल गया था इसलिये उनसे कहा कि मुझे मेरा कोड़ा दे दो लेकिन उन्होंने कहा कि हम इसमें तुम्हारी कोई मदद नहीं करेंगे (क्योंकि हम मुह़रिम हैं) मैंने उतरकर ख़ुद कोड़ा उठाया और उसके पीछे से उसे मारा, वो वहीं गिर गया फिर मैंने उसे ज़िब्ह़ किया और अपने साथियों के पास उसे लेकर आया। मैंने कहा कि अब उठो और उसे उठाओ, उन्होंने कहा कि हम इसे नहीं छुएँगे। चुनाँचे मैं ही उसे उठाकर उनके पास लाया। कुछ ने तो उसका गोश्त खाया लेकिन कुछ ने इंकार कर दिया फिर मैंने उनसे कहा कि अच्छा मैं अब तुम्हारे लिये आँह़ज़रत (ﷺ) से रुकने की दरख़्वास्त करूँगा। मैं आँह़ज़रत (ﷺ) के पास पहुँचा और आपसे वाक़िया बयान किया। आपने फ़र्माया कि तुम्हारे पास उसमें से कुछ बाक़ी बचा है? मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ। फ़र्माया खाओ क्योंकि ये एक खाना है जो अल्लाह तआ़ला ने तुमको खिलाया है। (राजेअ़ : 1521)

٥٤٩٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنَا عَمْرٌو أَنَّ أَبَا النَّضْرِ حَدَّثَهُ عَنْ نَافِعٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ وَأَبِي صَالِحٍ مَوْلَى التَّوْأَمَةِ سَمِعْتُ أَبَا قَتَادَةَ قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِيمَا بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ وَهُمْ مُحْرِمُونَ وَأَنَا رَجُلٌ حِلٌّ عَلَى فَرَسٍ، وَكُنْتُ رَقَّاءً عَلَى الْجِبَالِ، فَبَيْنَا أَنَا عَلَى ذَلِكَ إِذْ رَأَيْتُ النَّاسَ مُتَشَوِّفِينَ لِشَيْءٍ، فَذَهَبْتُ أَنْظُرُ فَإِذَا هُوَ حِمَارُ وَحْشٍ، فَقُلْتُ لَهُمْ: مَا هَذَا؟ قَالُوا: لاَ نَدْرِي، قُلْتُ: هُوَ حِمَارٌ وَحْشِيٌّ، فَقَالُوا: هُوَ مَا رَأَيْتَ. وَكُنْتُ نَسِيتُ سَوْطِي، فَقُلْتُ لَهُمْ : نَاوِلُونِي سَوْطِي فَقَالُوا: لاَ نُعِينُكَ عَلَيْهِ، فَنَزَلْتُ فَأَخَذْتُهُ، ثُمَّ ضَرَبْتُ فِي أَثَرِهِ، فَلَمْ يَكُنْ إِلاَّ ذَاكَ حَتَّى عَقَرْتُهُ، فَأَتَيْتُ إِلَيْهِمْ فَقُلْتُ لَهُمْ: قُومُوا فَاحْتَمِلُوا قَالُوا : لاَ نَمَسُّهُ، حَتَّى جِئْتُهُمْ بِهِ فَأَبَى بَعْضُهُمْ وَأَكَلَ بَعْضُهُمْ، فَقُلْتُ : أَنَا أَسْتَوْقِفُ لَكُمُ النَّبِيَّ ﷺ فَأَدْرَكْتُهُ، فَحَدَّثْتُهُ الْحَدِيثَ، فَقَالَ لِي ((أَبَقِيَ مَعَكُمْ شَيْءٌ مِنْهُ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. فَقَالَ: ((كُلُوا فَهُوَ طُعْمٌ أَطْعَمَكُمُوهَا اللهُ)).

[راجع: ١٥٢١]

तश्रीह़ : ह़ज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) ने अपने को शिकार के लिये पहाड़ों पर चढ़ने का आ़दी बताया है। यही बाब से मुत़ाबक़त है। तवामा वो लड़की जो जुड़वाँ पैदा हो। ये उमय्या बिन ख़ल्फ़ की बेटी थी जो अपने भाई के साथ जुड़वा पैदा हुई थी। इसलिये उसका यही नाम पड़ गया।

बाब 12 : सूरह माइदह की उस आयत की तफ़्सीर कि, ह़लाल किया गया है तुम्हारे लिये

١٢- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿أُحِلَّ

दरिया का शिकार खाना

لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ﴾

وَقَالَ عُمَرُ: صَيْدُهُ مَا اصْطِيدَ، وَطَعَامُهُ مَا رُمِيَ بِهِ. وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: الطَّافِي حَلاَلٌ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : طَعَامُهُ مَيْتَتُهُ، إلاَّ مَا قَذِرْتَ مِنْهَا وَالْجِرِيُّ لاَ تَأْكُلُهُ الْيَهُودُ، وَنَحْنُ نَأْكُلُهُ وَقَالَ شُرَيْحٌ صَاحِبُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كُلُّ شَيْءٍ فِي الْبَحْرِ مَذْبُوحٌ. وَقَالَ عَطَاءٌ : أَمَّا الطَّيْرُ فَأَرَى أَنْ يَذْبَحَهُ وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ: قُلْتُ لِعَطَاءٍ صَيْدُ الأَنْهَارِ وَقِلاَتِ السَّيْلِ أَصَيْدُ بَحْرٍ هُوَ؟ قَالَ: نَعَمْ : ثُمَّ تَلاَ ﴿هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ. وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ، وَمِنْ كُلٍّ تَأْكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا﴾ وَرَكِبَ الْحَسَنُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ عَلَى سَرْجٍ مِنْ جُلُودِ كِلاَبِ الْمَاءِ. وَقَالَ الشَّعْبِيُّ : لَوْ أَنَّ أَهْلِي أَكَلُوا الضَّفَادِعَ لأَطْعَمْتُهُمْ. وَلَمْ يَرَ الْحَسَنُ بِالسُّلَحْفَاةِ بَأْسًا. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: كُلْ مِنْ صَيْدِ الْبَحْرِ، وَ إِنْ صَادَهُ نَصْرَانِيٌّ أَوْ يَهُودِيٌّ أَوْ مَجُوسِيٌّ. وَقَالَ أَبُو الدَّرْدَاءِ فِي الْمُرْيِ: ذَبَحَ الْخَمْرَ النِّينَانُ وَالشَّمْسُ.

उमर (रज़ि.) ने कहा कि दरिया का शिकार वो है जो तदबीर या'नी जाल वग़ैरह से शिकार किया जाए और, उसका खाना वो है जिसे पानी ने बाहर फेंक दिया हो। अबूबक्र (रज़ि .) ने कहा कि जो दरिया का जानवर मरकर पानी के ऊपर तैरकर आए वो हलाल है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि, उसका खाना से मुराद दरिया का मुरदार है, सिवा उसके जो बिगड़ गया हो। बाम, झींगा मछली को यहूदी नहीं खाते, लेकिन हम (फ़राग़त से) खाते हैं, और नबी करीम (ﷺ) के सहाबी शुरैह (रज़ि.) ने कहा कि हर दरियाई जानवर मज़्बूहा है, उसे ज़िब्ह की ज़रूरत नहीं। अता ने कहा कि दरियाई परिन्दे के बारे में मेरी राय है कि उसे ज़िब्ह करे। इब्ने जुरैज ने कहा कि मैंने अता बिन अबी रिबाह से पूछा, क्या नहरों का शिकार और सैलाब के गढ़ों का शिकार भी दरियाई शिकार है (कि उसका खाना बिला ज़िब्ह जाइज़ हो) कहा कि हाँ। फिर उन्होंने (दलील के तौर पर) सूरह नहल की इस आयत की तिलावत की कि, ये दरिया बहुत ज़्यादा मीठा है और ये दूसरा दरिया बहुत ज़्यादा खारा है और तुम उनमें से हर एक से ताज़ा गोश्त (मछली) खाते हो और हसन (रज़ि.) दरियाई कुत्ते के चमड़े से बनी हुई ज़ीन पर सवार हुए और शअबी ने कहा कि अगर मेरे घर वाले मेंढक खाएँ तो मैं भी उनको खिलाऊँगा और हसन बसरी कछुआ खाने में कोई हर्ज नहीं समझते थे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि दरियाई शिकार खाओ ख़्वाह नसरानी ने किया हो या किसी यहूदी ने किया हो या मजूसी ने किया हो और अबू दर्दा (रज़ि.) ने कहा कि शराब में मछली डाल दें और सूरज की धूप उस पर पड़े तो फिर वो शराब नहीं रहती।

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इस अष़र को इसलिये लाए कि मछली के शराब में डालने से वही अषर होता है जो शराब में नमक डालने से क्योंकि फिर शराब की सिफ़त उसमें बाक़ी नहीं रह जाती। ये उन लोगों के मज़हब पर मब्नी है जो शराब का सिर्का बनाना दुरुस्त जानते हैं। कुछ ने मरी को मकरूह रखा है। मरी उसको कहते हैं कि शराब में नमक और मछली डालकर धूप में रख दें। क़स्तलानी ने कहा कि यहाँ इमाम बुख़ारी (रह.) ने शाफ़िइया का ख़िलाफ़ किया है क्योंकि इमाम बुख़ारी (रह.) किसी ख़ास मुज्तहिद की पैरवी करने वाले नहीं हैं बल्कि जिस क़ौल की दलील क़वी होती है उसको ले लेते हैं। आजकल अकष़र मुक़ल्लिदीन हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) को शाफ़ई कह कर गिराते हैं। उनकी ये हफ़्वात हर्गिज़ लायक़े तवज्जह नहीं हैं। इमाम बुख़ारी (रह.) पुख़्ता अहले हदीष़ और किताबो सुन्नत को मानने वाले, तक़्लीदे जामिद से कोसों दूर ख़ुद फ़क़ीहे आज़म व मुज्तहिदे मुअज़्ज़म थे।

ह़ज़रत इमाम शअ़बी का नाम आ़मिर बिन शुरह़बील बिन अ़ब्द अबू अ़म्र शअ़बी ह़िमयरी है। मुष्बत व षिक़ा व इमाम बुज़ुर्ग मर्तबा ताबेई हैं। पाँच सौ स़ह़ाबा किराम को देखा। अड़तालीस (48) स़ह़ाबा से अह़ादीष़ रिवायत की हैं। सन 17 हिजरी में पैदा हुए और सन 107 हिजरी के लगभग में वफ़ात पाई। इमाम शअ़बी ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) के सबसे बड़े उस्ताद और इब्राहीम नख़ई के हम अ़स्र हैं। इमाम शअ़बी अह़कामे शरइया में क़यास के क़ाइल न थे। उनके ह़िल्म व करम का ये आ़लम था कि रिश्तेदारी में जिसके बारे में उनको मा'लूम हो जाता कि वो क़र्ज़दार होकर मरे हैं तो उनका क़र्ज़ ख़ुद अदा कर देते। इमाम शअ़बी ने कभी अपने किसी ग़ुलाम व लौण्डी को ज़द व कूब नहीं किया। कूफ़ा के अकष़र उ़लमा के बरख़िलाफ़ ह़ज़रत उ़ष़्मान व ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) दोनों के बारे में अच्छा अ़क़ीदा रखते थे। फ़त्वा देने में निहायत मुह़तात़ थे। उनसे जो मसला पूछा जाता अगर उसके बारे मे उनके पास कोई ह़दीष़ न होती तो ला अदरी मैं नहीं जानता कह दिया करते। आ'मश का बयान है कि एक शख़्स ने इमाम शअ़बी से पूछा कि इब्लीस की बीवी का क्या नाम है। इमाम शअ़बी ने कहा कि ज़ाक अ़र्स मा शहित्तुहू मुझे उस शादी में शिर्कत का इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ था। एक मर्तबा ख़ुरासान की मुहिम पर क़ुतैबा बिन मुस्लिम बाहली अमीरुल मुजाहिदीन के साथ जिहाद में शरीक हुए और कार हाय नुमायाँ अंजाम दिये। अ़ब्दुल मलिक ने इमाम शअ़बी को शाहे रोम के पास सफ़ीर बनाकर भेजा था। (तज़्किरतुल ह़ुफ़्फ़ाज़ : जिल्द 1 पेज नं. 45 त़मीम)

5493. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने कहा कि मुझे अ़म्र ने ख़बर दी और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम ग़ज़्व-ए-ख़ब्त़ में शरीक थे, हमारे अमीरुल जैश ह़ज़रत अबू उ़बैदह (रज़ि.) थे। हम सब भूख से बेताब थे कि समुन्दर ने एक मुर्दा मछली बाहर फेंकी। ऐसी मछली देखी नहीं गई थी। उसे अ़म्बर कहते थे, हमने वो मछली पन्द्रह दिन तक खाई। फिर अबू उ़बैदह (रज़ि.) ने उसकी एक हड्डी लेकर (खड़ी कर दी) तो वो इतनी ऊँची थी कि एक सवार उसके नीचे से गुज़र गया। (राजेअ़ : 2483)

٥٤٩٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرٌو أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: غَزَوْنَا جَيْشَ الْخَبَطِ، وَأُمِّرَ أَبُو عُبَيْدَةَ، فَجُعْنَا جُوعًا شَدِيدًا، فَأَلْقَى الْبَحْرُ حُوتًا مَيِّتًا لَمْ يُرَ مِثْلُهُ يُقَالُ لَهُ الْعَنْبَرُ، فَأَكَلْنَا مِنْهُ نِصْفَ شَهْرٍ، فَأَخَذَ أَبُو عُبَيْدَةَ عَظْمًا مِنْ عِظَامِهِ فَمَرَّ الرَّاكِبُ تَحْتَهُ.
[راجع: ٢٤٨٣]

ये ग़ज़्वा सन 8 हिजरी में किया गया था जिसमें भूख की वजह से लोगों ने पत्ते खाए, इसीलिये उसे जैशुल ख़ब्त़ कहा गया।

5494. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बरदी, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने तीन सौ सवार रवाना किये। हमारे अमीर अबू उ़बैदह (रज़ि.) थे। हमें क़ुरैश के तिजारती क़ाफ़िला की नक़ल व ह़रकत पर नज़र रखनी थी फिर (खाना ख़त्म हो जाने की वजह से) हम सख़्त भूख और फ़ाक़ा की ह़ालत में थे। नौबत यहाँ तक पहुँच गई थी कि हम सल्लम के पत्ते (ख़ब्त़) खाकर वक़्त गुज़ारते थे। इसीलिये इस मुहिम का नाम जैशुल ख़ब्त़ पड़ गया और समुन्दर ने एक मछली बाहर डाल दी। जिसका नाम अ़म्बर

٥٤٩٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو وَقَالَ: سَمِعْتُ جَابِرًا يَقُولُ: بَعَثَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلاَثَمِائَةِ رَاكِبٍ، وَأَمِيرُنَا أَبُوعُبَيْدَةَ نَرْصُدُ عِيرًا لِقُرَيْشٍ، فَأَصَابَنَا جُوعٌ شَدِيدٌ حَتَّى أَكَلْنَا الْخَبَطَ فَسُمِّيَ جَيْشَ الْخَبَطِ، وَأَلْقَى الْبَحْرُ حُوتًا يُقَالُ لَهُ الْعَنْبَرُ : فَأَكَلْنَا نِصْفَ شَهْرٍ، وَادَّهَنَّا بِوَدَكِهِ حَتَّى صَلَحَتْ

और (ज़िब्ह करते वक़्त) जानवर पर अल्लाह का नाम लिया हो तो उसे खाओ अल्बत्ता (ज़िब्ह करने वाला आला) दांत और नाख़ुन न होना चाहिये। दांत इसलिये नहीं कि ये हड्डी है (और हड्डी से ज़िब्ह करना जाइज़ नहीं है) और नाख़ुन इसलिये नहीं कि हब्शी लोग उनको छुरी की जगह इस्ते'माल करते हैं।
(राजेअ : 2488)

وَسَأُخْبِرُكُمْ عَنْهُ أَمَّا السِّنُّ فَعَظْمٌ وَأَمَّا الظُّفُرُ فَمُدَى الْحَبَشَةِ)).

[راجع: ٢٤٨٨]

इस बाब का मतलब इस लफ़्ज़ से निकलता है **व ज़ुकिरस्मुल्लाहि अलैहि** हनफ़िया ने उस नाख़ून और दांत से ज़िब्ह जाइज़ रखा है जो आदमी के बदन से जुदा हो मगर ये सहीह नहीं है।

बाब 16 : वो जानवर जिनको थानों और बुतों के नाम पर ज़िब्ह किया गया हो उनका खाना हराम है

١٦- باب مَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَالأَصْنَامِ

5499. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ या'नी इब्नुल मुख़्तार ने बयान किया, उन्हें मूसा बिन उक़्बा ने ख़बर दी, कहा कि मुझे सालिम ने ख़बर दी, उन्होंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना और उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कि आँहुज़ूर (ﷺ) की ज़ैद बिन अ़म्र बिन नौफ़िल से मुक़ामे बलदह के नशीबी हिस्सा में मुलाक़ात हुई। ये आप पर वह्य नाज़िल होने से पहले का ज़माना है। आपने वो दस्तरख़्वान जिसमें गोश्त था जिसे उन लोगों ने आपकी ज़ियाफ़त के लिये पेश किया था मगर उन पर ज़िब्ह के वक़्त बुतों का नाम लिया गया था, आपने उसे ज़ैद बिन अ़म्र के सामने वापस फ़र्मा दिया और आपने फ़र्माया कि तुम जो जानवर अपने बुतों के नाम पर ज़िब्ह करते हो मैं उन्हें नहीं खाता, मैं सिर्फ़ उसी जानवर का गोश्त खाता हूँ जिस पर (ज़िब्ह करते वक़्त) अल्लाह का नाम लिया गया हो।

٥٤٩٩- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، يَعْنِي ابْنَ الْمُخْتَارِ أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ يُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ لَقِيَ زَيْدَ بْنَ عَمْرِو ابْنِ نُفَيْلٍ بِأَسْفَلِ بَلْدَحٍ وَذَاكَ قَبْلَ أَنْ يُنْزَلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ الْوَحْيُ، فَقَدَّمَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ سُفْرَةً فِيهَا لَحْمٌ، فَأَبَى أَنْ يَأْكُلَ مِنْهَا، ثُمَّ قَالَ: ((إِنِّي لاَ آكُلُ مِمَّا تَذْبَحُونَ عَلَى أَنْصَابِكُمْ، وَلاَ آكُلُ إِلاَّ مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ)).

तश्रीह : क़ुर्आनी दलील **व मा उहिल्ल लिग़ैरिल्लाहि** (अल माइद : 3) से उन तमाम जानवरों का गोश्त हराम हो जाता है जो जानवर ग़ैरुल्लाह के नाम पर तक़र्रुब के लिये नज़्र कर दिये जाते हैं। उसी में मदार का बकरा और सय्यद सालार के नाम पर छोड़ा हुआ जानवर भी दाख़िल है जैसा कि अहले बिदअ़त का मा'मूल है। बलदह हिजाज में मक्का के क़रीब एक मुक़ाम है। रिवायत में मज़्कूरा ज़ैद बिन अ़म्र सईद बिन ज़ैद के वालिद हैं और सईद अ़शरा मुबश्शरह में से हैं। रज़ियल्लाहु अ़न्हुम व अरज़ाहुम।

बाब 17 : इस बारे में कि नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद है कि जानवर को अल्लाह ही के नाम पर ज़िब्ह करना चाहिये

١٧- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((فَلْيَذْبَحْ عَلَى اسْمِ اللهِ))

5500. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने, उनसे जुन्दब बिन सुफ़यान

٥٥٠٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ عَنْ جُنْدَبِ بْنِ

या सअ़द बिन मुआ़ज़ ने उन्हें ख़बर दी कि कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) की एक लौण्डी सल्अ़ पहाड़ी पर बकरियाँ चराया करती थी। रेवड़ में से एक बकरी मरने लगी तो उसने उसे मरने से पहले पत्थर से ज़िब्ह कर दिया फिर नबी करीम (ﷺ) से उसके बारे में पूछा गया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे खाओ।

جَارِيَةً لِكَعْبِ بْنِ مَالِكٍ كَانَتْ تَرْعَى غَنَمًا بِسَلْعٍ فَأُصِيبَتْ شَاةٌ مِنْهَا، فَأَدْرَكَتْهَا فَذَبَحَتْهَا بِحَجَرٍ، فَسُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((كُلُوهَا)).

बाब और अह़ादीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है।

बाब 20 : इस बारे में कि जानवर को दांत, हड्डी और नाख़ुन से ज़िब्ह न किया जाए

٢٠- باب لاَ يُذَكَّى بِالسِّنِّ وَالْعَظْمِ وَالظُّفُرِ

5506. हमसे क़ुबैस़ा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अ़बाया बिन रिफ़ाअ़ा ने, और उनसे राफ़ेअ़ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि खाओ या'नी (ऐसे जानवर को जिसे ऐसी धारदार चीज़ से ज़िब्ह किया गया हो) जो ख़ून बहा दे। सिवा दांत और नाख़ुन के (या'नी उनसे ज़िब्ह करना दुरुस्त नहीं है) (राजेअ़ : 2488)

٥٥٠٦- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رِفَاعَةَ عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((كُلْ يَعْنِي - مَا أَنْهَرَ الدَّمَ - إِلاَّ السِّنَّ وَالظُّفُرَ)).
[راجع: ٢٤٨٨]

तशरीह : बाब की ह़दीष़ में सिर्फ़ दांत और नाख़ुन का ज़िक्र है हड्डी इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इस ह़दीष़ के दूसरे त़रीक़ से निकाली जिसमें दांत से ज़िब्ह जाइज़ न होने की ये वजह मज़्कूर है कि वो हड्डी है।

बाब : 21 देहातियों या उनके जैसे (अह़कामे दीन से बेख़बर लोगों) का ज़बीह़ा कैसा है?

٢١- باب ذَبِيحَةِ الأَعْرَابِ وَنَحْوِهِمْ

5507. हमसे मुह़म्मद बिन ड़बैदुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे उसामा बिन ह़फ़्स़ मदनी ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ड़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि (गाँव के) कुछ लोग हमारे यहाँ गोश्त (बेचने) लाते हैं और हमें मा'लूम नहीं कि उन्होंने उस पर अल्लाह का नाम भी (ज़िब्ह करते वक़्त) लिया था या नहीं? आपने फ़र्माया कि तुम उन पर खाते वक़्त अल्लाह का नाम लिया करो और खा लिया करो। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ये लोग अभी इस्लाम में नये नये दाख़िल हुए थे। उसकी मुताबअ़त अ़ली ने दरावर्दी से की और उसकी मुताबअ़त अबू ख़ालिद और तुफ़ावी ने की। (राजेअ़ : 2057)

٥٥٠٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أُسَامَةُ بْنُ حَفْصٍ الْمَدَنِيُّ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا. أَنَّ قَوْمًا قَالُوا لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّ قَوْمًا يَأْتُونَا بِاللَّحْمِ لاَ نَدْرِي أَذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ أَمْ لاَ، فَقَالَ: ((سَمُّوا عَلَيْهِ أَنْتُمْ وَكُلُوهُ)). قَالَتْ: وَكَانُوا حَدِيثِي عَهْدٍ بِالْكُفْرِ. تَابَعَهُ عَلِيٌّ عَنِ الدَّرَاوَرْدِيِّ وَتَابَعَهُ أَبُو خَالِدٍ وَالطُّفَاوِيُّ.[راجع: ٢٠٥٧]

बाब 22 : अहले किताब के ज़बीहे और उन ज़बीहों की चर्बी

٢٢- باب ذَبَائِحِ أَهْلِ الْكِتَابِ

الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ كَانَ يُحَدِّثُهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ثُمَّ يَقُولُ : كَانَ أَبُو بَكْرٍ يُلْحِقُ مَعَهُنَّ وَلاَ يَنْتَهِبُ نُهْبَةً ذَاتَ شَرَفٍ يَرْفَعُ النَّاسُ إِلَيْهِ أَبْصَارَهُمْ فِيهَا حِينَ يَنْتَهِبُهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ. [راجع: ٢٤٧٥]

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) फिर उन्होंने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की हदीष़ में बताई गई बातों के साथ इतना और ज़्यादा करते थे कि कोई शख़्स (दिन दहाड़े) अगर किसी बड़ी पूँजी पर इस त़ौर डाका डालता है कि लोग देखते के देखते रह जाते हैं तो वो मोमिन रहते हुए ये लूटमार नहीं करता। (राजेअ़ : 2475)

तश्रीह : मत़लब ये है कि उन गुनाहों का इर्तिकाब करने वाला ईमान से बिलकुल महरूम हो जाता है क्योंकि ये गुनाह ईमान की ज़िद (विपरीत) हैं फिर अगर वो तौबा कर ले तो उसके दिल में ईमान लौट आता है और अगर यही काम करता रहे तो वो बेईमान बनकर मरता है। इसकी ताईद वो हदीष़ करती है जिसमें फ़र्माया कि **अल्मूमिनु मन अमिनहुन्नासु अ़ला दिमाइहिम व अम्वालिहिम** मोमिन वो है जिसको लोग अपने ख़ून और अपने मालों के लिये अमानतदार समझें, सच है। **ला ईमान लिमन ला अमानत लहू व ला दीन लिमन ला अ़हद लहू औ कमा क़ाल (ﷺ)**

बाब 2 : शराब अंगूर वग़ैरह से भी बनती है

٢- باب الْخَمْرِ مِنَ الْعِنَبِ وَغَيْرِهِ

जैसे खजूर और शहद वग़ैरह से। इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये बाब लाकर उन लोगों का रद्द किया जो शराब को अंगूर से ख़ास़ करते हैं और कहते हैं कि अंगूर के सिवा और चीज़ों की शराब इतनी पीनी दुरुस्त है कि नशा न पैदा हो लेकिन इमाम मुहम्मद ने इस बाब में अपने मज़हब के ख़िलाफ़ किया है और वो अहले हदीष़ और इमाम अहमद और इमाम मालिक और इमाम शाफ़िई और जुम्हूर के मुवाफ़िक़ हो गये हैं। उन्होंने कहा कि जिस चीज़ से नशा पैदा हो वो शराब है। थोड़ी हो या ज़्यादा बिलकुल हराम है।

٥٥٧٩- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ صَبَّاحٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ هُوَ ابْنُ مِغْوَلٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : لَقَدْ حُرِّمَتِ الْخَمْرُ وَمَا بِالْمَدِينَةِ مِنْهَا شَيْءٌ. [راجع: ٤٦١٦]

5579. हमसे हसन बिन स़ब्बाह ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन साबिक़ ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने जो मिग़्वल के स़ाहबज़ादे हैं, बयान किया उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब शराब हराम की गई तो अंगूर की शराब मदीना मुनव्वरह में नहीं मिलती थी। (राजेअ़ : 4616)

٥٥٨٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا أَبُو شِهَابٍ عَبْدُ رَبِّهِ بْنُ نَافِعٍ عَنْ يُونُسَ عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: حُرِّمَتْ عَلَيْنَا الْخَمْرُ، حِينَ حُرِّمَتْ، وَمَا نَجِدُ - يَعْنِي بِالْمَدِينَةِ - خَمْرَ الأَعْنَابِ إِلاَّ قَلِيلاً، وَعَامَّةُ خَمْرِنَا الْبُسْرُ وَالتَّمْرُ. [راجع: ٢٤٦٤]

5580. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू शिहाब अ़ब्दुरब्बिह बिन नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यूनुस ने, उनसे ष़ाबित बिनानी ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जब शराब हम पर हराम की गई तो मदीना मुनव्वरह में अंगूर की शराब बहुत कम मिलती थी। आ़म इस्ते'माल की शराब कच्ची और पक्की खजूर से तैयार की जाती थी। (राजेअ़ : 2464)

٥٥٨١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ أَبِي حَيَّانَ حَدَّثَنَا عَامِرٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ

5581. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा उनसे अबू हय्यान ने, कहा हमसे आ़मिर ने बयान किया और उनसे हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि हज़रत

उमर (रज़ि.) मिम्बर पर खड़े हुए और कहा अम्मा बअ़द! जब शराब की हुर्मत का हुक्म नाज़िल हुआ तो वो पाँच चीज़ों से बनती थी। अंगूर, खजूर, शहद, गेहूँ और जौ और शराब (ख़म्र) वो है जो अक़्ल को ज़ाइल कर दे। (राजेअ़ : 2619)

اللهُ عَنْهُمَا قَامَ عُمَرُ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: أَمَّا بَعْدُ، نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ وَهْيَ مِنْ خَمْسَةٍ: الْعِنَبِ، وَالتَّمْرِ، وَالْعَسَلِ، وَالْحِنْطَةِ، وَالشَّعِيرِ. وَالْخَمْرُ مَا خَامَرَ الْعَقْلَ.

[راجع: ٢٦١٩]

तश्रीह : इस हृदीष़ से मसाइल पेशआमदा की तफ़्सीलात का मिम्बर पर बयान करना भी ष़ाबित हुआ और ज़ाहिर है कि ये सामेईन की मादरी ज़ुबान में मुनासिब है नेज़ ह़म्द व नअ़त के बाद लफ़्ज़ अम्मा बअ़द! का इस्ते'माल करना भी उससे ष़ाबित हुआ। (फ़त्हुल बारी) सामेईन की मादरी ज़ुबान में अ़रबी ख़ुत्बा पढ़कर इसका तर्जुमा सुनाना ज़रूरी है वरना ख़ुत्बा का मक़्सद फ़ौत हो जाएगा।

बाब 3 : शराब की हुर्मत जब नाज़िल हुई तो वो कच्ची और पक्की खजूरों से तैयार की जाती थी

٣- باب نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ وَهْيَ مِنَ الْبُسْرِ وَالتَّمْرِ

5582. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मालिक बिन अनस ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लह़ा ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अबू उ़बैदह, अबू त़लह़ा और उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) को कच्ची और पक्की खजूर से तैयार की हुई शराब पिला रहा था कि एक आने वाले ने आकर बताया कि शराब ह़राम कर दी गई है। उस वक़्त ह़ज़रत अबू त़लह़ा (रज़ि.) ने कहा कि अनस उठो और शराब को बहा दो चुनाँचे मैंने उसे बहा दिया। (राजेअ़ : 2464)

٥٥٨٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ أَسْقِي أَبَا عُبَيْدَةَ وَأَبَا طَلْحَةَ وَأُبَيَّ بْنَ كَعْبٍ مِنْ فَضِيخِ زَهْوٍ وَتَمْرٍ فَجَاءَهُمْ آتٍ فَقَالَ : إِنَّ الْخَمْرَ قَدْ حُرِّمَتْ. فَقَالَ: أَبُو طَلْحَةَ قُمْ يَا أَنَسُ فَأَهْرِقْهَا، فَأَهْرَقْتُهَا.[راجع: ٢٤٦٤]

तश्रीह : ता'मील के लिये मदीना का ये ह़ाल था कि शराब बारिश के पानी की त़रह़ मदीना की गलियों में बह रही थी अल्अहादीष़ुल्वारिदतु अ़न अनसिन व ग़ैरूहु अ़ला सिह्हतिहा व क़ष़्रतिहा तब्तिलु मज़्हबल्कूफ़ीयीन अल्क़ाइलीन बिअन्नल्ख़म्र ला यकूनु इल्ला मिनल्इनबि व मा कान मिन ग़ैरिही ला युसम्मा ख़म्रन व ला यतानवलुहू इस्मुल्ख़म्रि व हुव क़ौलु मुख़ालिफ़िन लिलुग़तिल्अ़रबि व लिसुन्नतिस़्सह़ीह़ति व लिस़्सह़ाबति (फ़त्हुल्बारी)। या'नी क़ुर्तुबी ने कहा कि ह़ज़रत अनस (रज़ि.) वग़ैरह से जो स़ह़ीह़ रिवायात ह़ज़रत से नक़ल हुई हैं वो कूफ़ियों के मज़हब को बातिल ठहराती हैं जो कहते है कि ख़म्र सिर्फ़ अंगूर ही से कशीद कर्दा शराब को कहा जाता है और जो उसके अ़लावा चीज़ों से तैयार की जाए वो ख़म्र नहीं है। अहले कूफ़ा का ये क़ौल लुग़ते अ़रब और सुन्नते स़ह़ीह़ा और स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) के ख़िलाफ़ है।

5583. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे मअ़मर ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने कि मैंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक क़बीला में खड़ा मैं अपने चचाओं को खजूर की शराब पिला रहा था उनमें

٥٥٨٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : سَمِعْتُ أَنَسًا قَالَ : كُنْتُ قَائِمًا عَلَى الْحَيِّ أَسْقِيهِمْ عُمُومَتِي، وَأَنَا

ग़ालिब आ गया है और उसे क़ब्र तक पहुँचा के रहेगा। आपने फ़र्माया कि फिर ऐसा ही होगा। (राजेअ : 3618)

شَيْخٍ كَبِيرٍ تُزِيرُهُ الْقُبُورُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((فَنَعَمْ إِذًا)). [راجع: ٣٦١٨]

तश्रीह : बूढ़े के मुँह से बजाय कलिमात शुक्र के नाशुक्री का लफ़्ज़ निकला तो आपने भी ऐसा ही फ़र्माया और जो आपने फ़र्माया वही हुआ। एक तरफ़ आँहज़रत (ﷺ) की ख़ुश अख़्लाक़ी देखिए कि आप एक देहाती की एयादत के लिये तशरीफ़ ले गये और आपने अपनी पाकीज़ा दुआओं से उसे नवाज़ा। सच है इन्नका लअला ख़ुलुक़िन अज़ीम।

बाब 11 : मुश्रिक की एयादत भी जाइज़ है

١١- باب عِيَادَةِ الْمُشْرِكِ

5657. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे षाबित ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि एक यहूदी लड़का (अब्दूस नामी) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत किया करता था वो बीमार हुआ तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उसकी मिज़ाजपुर्सी के लिये तशरीफ़ लाए आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस्लाम क़ुबूल कर ले चुनाँचे उसने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया अपने वालिद से कि जब अबू तालिब की वफ़ात का वक़्त क़रीब हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) उनके पास मिज़ाजपुर्सी के लिये तशरीफ़ ले गये। (राजेअ : 1356)

٥٦٥٧- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، أَنَّ غُلاَمًا لِيَهُودَ كَانَ يَخْدُمُ النَّبِيَّ ﷺ فَمَرِضَ فَأَتَاهُ النَّبِيُّ ﷺ يَعُودُهُ فَقَالَ ((أَسْلِمْ)) فَأَسْلَمَ. وَقَالَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ لَمَّا حُضِرَ أَبُو طَالِبٍ جَاءَهُ النَّبِيُّ ﷺ. [راجع: ١٣٥٦]

तश्रीह : दूसरी रिवायत में यूँ है कि उसने अपने बाप की तरफ़ देखा बाप ने कहा कि बेटा अबुल क़ासिम (ﷺ) जो फ़र्मा रहे हैं वो मान ले चुनाँचे वो मुसलमान हो गया। ये हदीष ऊपर गुज़र चुकी है हज़रत इमाम बुख़ारी ने इस बाब में इन अहादीष को लाकर ये षाबित किया है कि अपने नौकरों और गुलामों तक की अगर वो बीमार हों एयादत करना सुन्नत है।

बाब 12 : कोई शख़्स किसी मरीज़ की एयादत के लिये गया और वहीं नमाज़ का वक़्त हो गया तो वहीं लोगों के साथ बाजमाअत नमाज़ अदा करे

١٢- باب إِذَا عَادَ مَرِيضًا فَحَضَرَتِ الصَّلاَةُ فَصَلَّى بِهِمْ جَمَاعَةً

5658. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि कुछ सहाबा नबी करीम (ﷺ) की आपके एक मर्ज़ के दौरान मिज़ाजपुर्सी करने आए। आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें बैठकर नमाज़ पढ़ाई लेकिन सहाबा खड़े होकर ही नमाज़ पढ़ रहे थे। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें बैठने का इशारा किया। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इमाम इसलिये है कि उसकी

٥٦٥٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنِي يَحْيَى حَدَّثَنَا هِشَامٌ، قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهِ نَاسٌ يَعُودُونَهُ فِي مَرَضِهِ فَصَلَّى بِهِمْ جَالِسًا فَجَعَلُوا يُصَلُّونَ قِيَامًا فَأَشَارَ إِلَيْهِمْ أَنِ اجْلِسُوا فَلَمَّا فَرَغَ قَالَ : ((إِنَّ الإِمَامَ لَيُؤْتَمُّ بِهِ فَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا

अस्अलुकल अफ़ुव्व वल आफ़िया ऐ अल्लाह! मैं तुझसे आफ़ियत के लिये सवाल करता हूँ।

5724. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उन्होंने कहा उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे फ़ातिमा बिन्ते मुंज़िर ने बयान किया कि हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के यहाँ जब कोई बुख़ार में मुब्तला औरत लाई जाती थी तो उसके लिये दुआ करतीं और उसके गिरेबान में पानी डालतीं वो बयान करती थीं कि रसूले करीम (ﷺ) ने हमें हुक्म दिया था कि बुख़ार को पानी से ठण्डा करो।

٥٧٢٤- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ الْمُنْذِرِ أَنَّ أَسْمَاءَ بِنْتَ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كَانَتْ إِذَا أُتِيَتْ بِالْمَرْأَةِ قَدْ حُمَّتْ تَدْعُو لَهَا أَخَذَتِ الْمَاءَ فَصَبَّتْهُ بَيْنَهَا وَبَيْنَ جَيْبِهَا وَقَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَأْمُرُنَا أَنْ نَبْرُدَهَا بِالْمَاءِ.

तश्रीह : एक रिवायत में है ज़मज़म के पानी से ठण्डा करो मुराद वो बुख़ार है जो सफ़रा के जोश से हो उसमें ठण्डे पानी से नहाना या हाथ पैर का धोना भी मुफ़ीद है। इसे आज की डॉक्टरी ने भी तस्लीम किया है शदीद बुख़ार में बर्फ़ का इस्ते'माल भी उसी क़बील से है।

5725. मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा कि मेरे वालिदने मुझको ख़बर दी और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बुख़ार जहन्नम की भाप में से है इसलिये उसे पानी से ठण्डा करो।

(राजेअ: 3263)

٥٧٢٥- حدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا أَبِي عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْحُمَّى مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ فَأَبْرِدُوهَا بِالْمَاءِ)).

[راجع: ٣٢٦٣]

5726. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अह्वस ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन मसरूक़ ने बयान किया, उनसे अबाया बिन रिफ़ाआ ने, उनसे उनके दादा राफ़ेअ बिन ख़दीज ने बयान किया कि मैं ने नबी करीम (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया कि बुख़ार जहन्नम की भाप में से है पस उसे पानी से ठण्डा कर लिया करो। (राजेअ: 3262)

٥٧٢٦- حدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رِفَاعَةَ عَنْ جَدِّهِ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((الْحُمَّى مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ فَابْرُدُوهَا بِالْمَاءِ)).

[راجع: ٣٢٦٢]

तश्रीह : मुरव्वजा (प्रचलित) डॉक्टरी का एक शुअबा इलाज पानी से भी है जो काफ़ी तरक़्क़ी पज़ीर है हमारे रसूलुल्लाह (ﷺ) को अल्लाह पाक ने जमीउ़ल उ़लूम नाफ़िया का ख़ज़ाना बनाकर मब्ऊष फ़र्माया था चुनाँचे फ़न्ने तिबाबत (मेडिकल) में आपके पेश कर्दा उसूल इस क़द्र जामेअ हैं कि कोई भी अक़्लमंद उनकी तर्दीद नहीं करा सकता।

बाब 29 : जहाँ की आबो हवा नामुवाफ़िक़ हो वहाँ से निकलकर दूसरे मुक़ाम पर जाना दुरुस्त है

٢٩- باب مَنْ خَرَجَ مِنْ أَرْضٍ لاَ تُلاَئِمُهُ

5727. हमसे अ़ब्दुल आ़ला बिन ह़म्माद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरेअ़ ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि क़बीला उ़क्ल और उ़रैना के कुछ लोग रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और इस्लाम के बारे में बातचीत की। उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह के नबी! हम मवेशी वाले हैं हम लोग अहले मदीना की त़रह़ काश्तकार नहीं हैं। मदीना की आबो हवा उन्हें मुवाफ़िक़ नहीं आई थी। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके लिये चंद ऊँटों और एक चरवाहे का हुक्म दिया और आपने फ़र्माया कि वो लोग उन ऊँटों के साथ बाहर चले जाएँ और उनका दूध और पेशाब पियें। वो लोग चले गये लेकिन ह़र्रा के नज़दीक पहुँचकर वो इस्लाम से मुर्तद हो गये और आँह़ज़रत (ﷺ) के चरवाहे को क़त्ल कर डाला और ऊँटों को लेकर भाग पड़े जब आँह़ज़रत (ﷺ) को इसकी ख़बर मिली तो आपने उनकी तलाश में आदमी दौड़ाए फिर आपने उनके बारे में हुक्म दिया और उनकी आँखों में सलाई फेर दी गई, उनके हाथ काट दिये गये और ह़र्रा के किनारे उन्हें छोड़ दिया गया, वो उसी ह़ालत में मर गये। (राजेअ़ : 233)

٥٧٢٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ حَدَّثَهُمْ أَنَّ نَاسًا أَوْ رِجَالاً مِنْ عُكْلٍ وَعُرَيْنَةَ قَدِمُوا عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَتَكَلَّمُوا بِالإِسْلاَمِ وَقَالُوا: يَا نَبِيَّ اللهِ إِنَّا كُنَّا أَهْلَ ضَرْعٍ وَلَمْ نَكُنْ أَهْلَ رِيفٍ وَاسْتَوْخَمُوا الْمَدِينَةَ فَأَمَرَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِذَوْدٍ وَبِرَاعٍ وَأَمَرَهُمْ أَنْ يَخْرُجُوا فِيهِ فَيَشْرَبُوا مِنْ أَلْبَانِهَا وَأَبْوَالِهَا فَانْطَلَقُوا حَتَّى كَانُوا نَاحِيَةَ الْحَرَّةِ كَفَرُوا بَعْدَ إِسْلاَمِ وَقَتَلُوا رَاعِيَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَاسْتَاقُوا الذَّوْدَ فَبَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ فَبَعَثَ الطَّلَبَ فِي آثَارِهِمْ وَأَمَرَ بِهِمْ فَسَمَرُوا أَعْيُنَهُمْ وَقَطَعُوا أَيْدِيَهُمْ وَتُرِكُوا فِي نَاحِيَةِ الْحَرَّةِ حَتَّى مَاتُوا عَلَى حَالِهِمْ.

[راجع: ٢٣٣]

आबो हवा रास न आने पर आपने उन लोगों को मदीना से ह़र्रा भेज दिया था बाद में वो मुर्तद होकर डाकू बन गये और उन्होंने ऐसी ह़रकत की जिनकी यही सज़ा मुनासिब थी जो उनको दी गई। ह़दीष़ से बाब का मत़लब ज़ाहिर है ह़दीष़ और बाब में मुत़ाबक़त वाज़ेह़ है क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनको मदीना की आबो हवा नामुवाफ़िक़ आने की वजह से बाहर जाने का हुक्म दे दिया था।

बाब 30 : त़ाऊ़न का बयान

٣٠- باب مَا يُذْكَرُ فِي الطَّاعُونِ

5728. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, कहा कि मुझे ह़बीब बिन अबी ष़ाबित ने ख़बर दी, कहा कि मैंने इब्राहीम बिन सअ़द से सुना, कहा कि मैंने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से सुना, वो सअ़द (रज़ि.) से बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुम सुन लो कि किसी जगह त़ाऊ़न की वबा फैल रही है तो वहाँ मत जाओ लेकिन जब किसी जगह ये वबा फूट पड़े और तुम वहीं मौजूद हो तो उस जगह से निकलो भी मत (ह़बीब बिन अबी ष़ाबित ने बयाना किया कि मैंने इब्राहीम बिन सअ़द से) कहा तुमने ख़ुद ये ह़दीष़ उसामा (रज़ि.) से सुनी है कि उन्होंने सअ़द (रज़ि.) से बयान

٥٧٢٨- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي حَبِيبُ بْنُ أَبِي ثَابِتٍ قَالَ: سَمِعْتُ إِبْرَاهِيمَ بْنَ سَعْدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ يُحَدِّثُ سَعْدًا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا سَمِعْتُمْ بِالطَّاعُونِ فِي أَرْضٍ فَلاَ تَدْخُلُوهَا وَإِذَا وَقَعَ بِأَرْضٍ وَأَنْتُمْ بِهَا فَلاَ تَخْرُجُوا مِنْهَا)) فَقُلْتُ أَنْتَ

मालिक ने, उनसे सुमय ने, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि पेट की बीमारी में या'नी हैज़ा से मरने वाला शहीद है और त़ाऊन की बीमारी में मरने वाला शहीद है। (राजेअ : 653)

سُمَيٍّ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْمَبْطُونُ شَهِيدٌ وَالْمَطْعُونُ شَهِيدٌ)).[راجع: ٦٥٣]

तश्रीह : त़ाऊन एक बड़ी ख़त़रनाक वबाई बीमारी है जिसने बारहा नूए इंसानी को सख़्त तरीन नुक़्सान पहुँचाया है। हिन्दुस्तान में भी इसके ब रहा ह़मले हुए और लाखों इंसान लुक़्मा-ए-अजल बन गये। इस्लाम में त़ाऊन ज़दा मुसलमान की मौत को शहादत की मौत क़रार दिया गया है त़ाऊन अ़ज़ाबे इलाही है जो कष़रते मआ़स़ी से दुनिया पर मुसल्लत़ किया जाता है, अल्लाहुम्म अह़फ़िज़्ना मिन्हु।

बाब 31 : जो शख़्स त़ाऊन में स़ब्र करके वहीं रहे गो उसको त़ाऊन न हो, उसकी फ़ज़ीलत का बयान

٣١- باب أَجْرِ الصَّابِرِ فِي الطَّاعُونِ

5734. हमसे इस्ह़ाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमको ह़िब्बान ने ख़बर दी, कहा हमसे दाऊद बिन अबिल फ़ुरात ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने, उनसे यह़्या बिन य़मर ने और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा आ़इशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से त़ाऊन के बारे में पूछा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये एक अ़ज़ाब था अल्लाह तआ़ला जिस पर चाहता उस पर उसको भेजता फिर अल्लाह तआ़ला ने उसे मोमिनीन (उम्मते मुह़म्मदिया के लिये) रह़मत बना दिया अब कोई भी अल्लाह का बन्दा अगर स़ब्र के साथ उस शहर में ठहरा रहे जहाँ त़ाऊन फूट प ड़ी हो और यक़ीन रखता है कि जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने उसके लिये लिख दिया है उसके सिवा उसको और कोई नुक़्सान नहीं पहुँच सकता और फिर त़ाऊन में उसका इंतिक़ाल हो जाए तो उसे शहीद जैसा ष़वाब मिलेगा। ह़िब्बान बिन हिलाल के साथ इस ह़दीष़ को नज़्र बिन शुमैल ने भी दाऊद से रिवायत किया है। (राजेअ : 3473)

٥٧٣٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا حَبَّانُ حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي الْفُرَاتِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ يَعْمَرَ عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ أَنَّهَا أَخْبَرَتْنَا أَنَّهَا سَأَلَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنِ الطَّاعُونِ فَأَخْبَرَهَا نَبِيُّ اللهِ صلى الله عليه وسلم: ((أَنَّهُ كَانَ عَذَابًا يَبْعَثُهُ اللهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ، فَجَعَلَهَا اللهُ رَحْمَةً لِلْمُؤْمِنِينَ، فَلَيْسَ مِنْ عَبْدٍ يَقَعُ الطَّاعُونُ فَيَمْكُثُ فِي بَلَدِهِ صَابِرًا يَعْلَمُ أَنَّهُ لَنْ يُصِيبَهُ إِلاَّ مَا كَتَبَ اللهُ لَهُ إِلاَّ كَانَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِ الشَّهِيدِ)). تَابَعَهُ النَّضْرُ عَنْ دَاوُدَ. [راجع: ٣٤٧٤]

तश्रीह : इब्ने माजा और बैहक़ी की रिवायत में यूँ है कि त़ाऊन उस वक़्त पैदा होता है जब किसी मुल्क में बदकारी आ़म तौर पर फैल जाती है। मौलाना रूम ने सच कहा है। वज़ ज़िना ख़ीज़द वबा अंदर जिहात। मुसलमान के लिये त़ाऊन की मौत मरना शहादत का दर्जा रखता है। जैसा कि इस ह़दीष़ में ज़िक्र है।

बाब 32 : क़ुर्आन मजीद और मुअ़व्विज़ात पढ़कर मरीज़ पर दम करना

٣٢- بَابُ الرُّقَى بِالْقُرْآنِ وَالْمُعَوِّذَاتِ

तश्रीह : क़स्त़लानी ने कहा कि नीचे की रिवायत से दम झाड़ का जवाज़ निकलता है बशर्ते कि अल्लाह के कलाम और उसके अस्मा व स़िफ़ात से हो और अ़रबी ज़ुबान में हो उसके मआ़नी मा'लूम हों और बशर्ते कि ये ए'तिक़ाद

न रहे कि दम झाड़ करना बज़ाते ख़ुद मुअष्ष़िर है बल्कि अल्लाह की तक़्दीर से मुअष्ष़िर हो सकते हैं। जैसे दवा अल्लाह के हुक्म से मुअष्ष़िर होती है।

5735. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) अपने मर्ज़ुल वफ़ात में अपने ऊपर मुअ़व्विज़ात (सूरह फ़लक़ और सूरह नास) का दम किया करते थे। फिर जब आपके लिये दुश्वार हो गया तो मैं उनका दम आप पर किया करती थी और बरकत के लिये आँह़ज़रत (ﷺ) का हाथ आपके जिस्मे मुबारक पर भी फेर लेती थी। फिर मैं ने उसके बारे में पूछा कि आँह़ज़रत (ﷺ) किस त़रह़ दम करते थे, उन्होंने बताया कि अपने हाथ पर दम करके हाथ को चेहरे पर फेरा करते थे। (राजेअ़: 4439)

٥٧٣٥– حدثني إبراهيم بن موسى أخبرنا هشام عن معمر عن الزهري عن عروة عن عائشة رضي الله عنها أن النبي كان ينفث على نفسه في المرض الذي مات فيه بالمعوذات فلما ثقل كنت أنفث عليه بهن وأمسح بيده نفسه لبركتها فسألت الزهري كيف ينفث؟ قال: كان ينفث على يديه ثم يمسح بهما وجهه. [راجع: ٤٤٣٩]

बाब 33 : सूरह फ़ातिह़ा से दम करना, इस बाब में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से एक रिवायत की है

٣٣– باب الرقى بفاتحة الكتاب

ويذكر عن ابن عباس عن النبي ﷺ

5736. मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने, उनसे शु़अबा ने, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे अबुल मुतवक्किल ने, उनसे अबू सई़द ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के चंद स़ह़ाबा ह़ालते सफ़र में अ़रब के एक क़बीला पर गुज़रे। क़बीला वालों ने उनकी ज़ियाफ़त नहीं की कुछ देर के बाद उस क़बीले के सरदार को बिच्छू ने काट लिया, अब क़बीले वालों ने उन स़ह़ाबा से कहा कि आप लोगों के पास कोई दवा या कोई झाड़ने वाला है। स़ह़ाबा ने कहा कि तुम लोगों ने हमें मेहमान नहीं बनाया और अब हम उस वक़्त तक दम नहीं करेंगे जब तक तुम हमारे लिये उसकी मज़दूरी न मुक़र्रर कर दो। चुनाँचे उन लोगों ने चंद बकरियाँ देनी मंज़ूर कर लीं फिर (अबू सई़द ख़ुदरी रज़ि.) सूरह फ़ातिह़ा पढ़ने लगे और उस पर दम करने में मुँह का थूक भी उस जगह पर डालने लगे। उससे वो शख़्स़ अच्छा हो गया। चुनाँचे क़बीला वाले बकरियाँ लेकर आए लेकिन स़ह़ाबा ने कहा कि जब तक हम नबी करीम (ﷺ) से न पूछ लें ये बकरियाँ नहीं ले सकते फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) से पूछा तो आप मुस्कुराए और फ़र्माया तुम्हें कैसे मा'लूम हो गया था कि सूरह फ़ातिह़ा से दम भी

٥٧٣٦– حدثنا محمد بن بشار حدثنا غندر حدثنا شعبة عن أبي بشر عن أبي المتوكل عن أبي سعيد الخدري رضي الله عنه أن ناسا من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم أتوا على حي من أحياء العرب فلم يقروهم فبينما هم كذلك إذ لدغ سيد أولئك فقالوا: هل معكم من دواء أو راق؟ فقالوا: إنكم لم تقرونا ولا نفعل حتى تجعلوا لنا جعلا فجعلوا لهم قطيعا من الشاء فجعل يقرأ بأم القرآن ويجمع بزاقه ويتفل فبرأ فأتوا بالشاء فقالوا: لا نأخذه حتى نسأل النبي ﷺ فسألوه فضحك وقال: وما أدراك أنها رقية خذوها واضربوا لي

एक औ़रत का महर ता'लीमे कु़र्आन पर कर दिया था जैसा कि पहले बयान हो चुका है।

बाब 35 : नज़रे बद लग जाने की सू़रत में दम करना

٣٥- باب رُقْيَةِ الْعَيْنِ

5738. हमसे मुह़म्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे मअ़बद बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद से सुना, उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे हुक्म दिया या (आपने इस त़रह़ बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने) हुक्म दिया कि नज़रे बद लग जाने पर मुअ़व्वज़तैन से दम कर लिया जाए।

٥٧٣٨- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنِي مَعْبَدُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ، سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ شَدَّادٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَمَرَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ أَوْ أَمَرَ أَنْ يُسْتَرْقَى مِنَ الْعَيْنِ.

मुअ़व्वज़तैन और सूरह फ़ातिह़ा पढ़ना बेहतरीन मुजर्रब दम हैं नीज़ दुआओं में **अऊ़ज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन शर्रि मा ख़लक़** मुजर्रब दुआ है।

5739. हमसे मुह़म्मद बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन वहब बिन अ़तिया दमिश्क़ी ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन वलीद ज़ुबैदी ने बयान किया, कहा हमको ज़ुह्री ने ख़बर दी, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने, उन्हें ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा (रज़ि.) ने और उनसे ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उनके घर में एक लड़की देखी जिसके चेहरे पर (नज़रे बद लगने की वजह से) काले धब्बे पड़ गये थे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस पर दम करा दो क्योंकि इसे नज़रे बद लग गई है। और अ़क़ील ने कहा उनसे ज़ुह्री ने, उन्हें उ़र्वा ने ख़बर दी और उन्होंने उसे नबी करीम (ﷺ) से मुर्सलन रिवायत किया है। मुह़म्मद बिन ह़र्ब के साथ इस ह़दीष़ को अ़ब्दुल्लाह बिन सालिम ने भी ज़ुबैदी से रिवायत किया है।

٥٧٣٩- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ وَهْبِ بن عَطِيَّةَ الدِّمَشْقِيُّ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْوَلِيدِ الزُّبَيْدِيُّ أَخْبَرَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى فِي بَيْتِهَا جَارِيَةً فِي وَجْهِهَا سَفْعَةٌ فَقَالَ: ((اسْتَرْقُوا لَهَا فَإِنَّ بِهَا النَّظْرَةَ)). وَقَالَ عُقَيْلٌ: عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنَا عُرْوَةُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، تَابَعَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَالِمٍ عَنِ الزُّبَيْدِيِّ.

तश्रीह : इसे ज़ुह्ली ने ज़ुहरियात में वस़्ल किया है। मा'लूम हुआ कि नज़रे बद का लग जाना ह़क़ है जैसे कि दूसरी ह़दीष़ में वारिद है। मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ लिखते हैं कि नज़रे बद वाले पर आयत **व इय्यकादुल्लज़ीन कफ़रू लियुज़्लिक़ूनक बिअब्स़ारिहिम लम्मा समिऊ़ज़्ज़िक्र व यक़ूलून इन्नहू लमज्नून** (अल् क़लम : 51)

बाब 36 : नज़रे बद का लगना ह़क़ है

٣٦- باب الْعَيْنُ حَقٌّ

5740. हमसे इस्ह़ाक़ बिन नस़्र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे हम्माम ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया नज़रे बद लगना ह़क़ है और आँह़ज़रत (ﷺ) ने जिस्म पर गोदने से मना फ़र्माया। (दीगर : 5944)

٥٧٤٠- حدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْعَيْنُ حَقٌّ)) وَنَهَى عَنِ الْوَشْمِ.

उन्हें अम्रह ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) दम करते वक़्त ये दुआ पढ़ा करते थे, हमारी ज़मीन की मिट्टी और हमारा कुछ थूक हमारे रब के हुक्म से हमारे मरीज़ को शिफ़ा हो। (राजेअ : 5745)

عَنْ عَمْرَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ فِي الرُّقْيَةِ: ((تُرْبَةُ أَرْضِنَا وَرِيقَةُ بَعْضِنَا يُشْفَى سَقِيمُنَا بِإِذْنِ رَبِّنَا)).
[راجع: ٥٧٤٥]

तश्रीह : नववी ने कहा आँहज़रत (ﷺ) अपना थूक कलिमे की उंगली पर लगाकर उसको ज़मीन पर रखते और ये दुआ पढ़ते फिर वो मिट्टी ज़ख़्म या दर्द के मक़ाम पर लगवाते अल्लाह के हुक्म से शिफ़ा हो जाती थी। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **व इन्न हाज़ा मिन बाबित्तबर्रूकि बिअस्माइल्लाहि तआला व आष़ार रसूलिही व अम्मा वज़्उल्इस्बइ बिल्अर्ज़ि फलअल्लहू ख़ास़िय्यतहू फ़ी ज़ालिक औ बिहिक्मति इख़फ़ाइ आषारल्क़ुदरति बिमुबाशरतिल्अस्बाबिल् मुअताद** (फ़त्ह) या'नी अल्लाह पाक के मुबारक नामों के साथ बरकत हासिल करना और उसके रसूल के आष़ार के साथ उस पर उँगली रखना पस ये शायद उसकी ख़ास़ियत की वजह से हो या आष़ारे क़ुदरत की कोई पोशिदा हिक्मत उसमें हो जो अस्बाबे ज़ाहिरी के साथ मेल रखती हो आष़ारे रसूल से वो उँगली मुराद है जो आप ज़मीन पर रखकर मिट्टी लगाकर दुआ पढ़ते थे। बनावटी आष़ार मुराद नहीं हैं।

बाब 39 : दुआ पढ़कर मरीज़ पर फूँक मारना इस तरह कि मुँह से ज़रा सा थूक भी निकले

٣٩- باب النَّفْثِ فِي الرُّقْيَةِ

5747. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया कि मैंने अबू सलमा बिन अब्दुर्रह्मान बिन औफ़ से सुना, कहा कि मैंने हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बेशक अच्छा ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से होता है, और हुल्म (बुरा ख़्वाब जिसमें घबराहट हो) शैतान की तरफ़ से होता है इसलिये जब तुममें से कोई शख़्स कोई ऐसा ख़्वाब देखे जो बुरा हो तो जागते ही तीन मर्तबा बाईं तरफ़ थू थू करे और उस ख़्वाब की बुराई से अल्लाह की पनाह मांगे, इस तरह ख़्वाब का उसे नुक़्सान नहीं होगा और अबू सलमा ने कहा कि पहले कुछ ख़्वाब मुझ पर पहाड़ से भी ज़्यादा भारी होता था जबसे मैंने ये हदीष़ सुनी और इस पर अमल करने लगा, अब मुझे कोई परवाह नहीं होती। (राजेअ : 3292)

٥٧٤٧- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا قَتَادَةَ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((الرُّؤْيَا مِنَ اللهِ وَالْحُلْمُ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَإِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ شَيْئًا يَكْرَهُهُ فَلْيَنْفُثْ حِينَ يَسْتَيْقِظُ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، وَيَتَعَوَّذْ مِنْ شَرِّهَا فَإِنَّهَا لاَ تَضُرُّهُ)). وَقَالَ أَبُو سَلَمَةَ: وَإِنْ كُنْتُ لأَرَى الرُّؤْيَا أَثْقَلَ عَلَيَّ مِنَ الْجَبَلِ فَمَا هُوَ إِلاَّ أَنْ سَمِعْتُ هَذَا الْحَدِيثَ فَمَا أُبَالِيهَا.
[راجع: ٣٢٩٢]

हदीष़ की मुताबक़त बाब का तर्जुमा से इस तरह है कि अल्लाह की पनाह चाहना यही मंतर है मंतर में फूँकना थू थू करना भी षाबित हुआ।

5748. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने, उनसे इब्ने शिहाब ज़ुहरी ने,

٥٧٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأُوَيْسِيُّ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ يُونُسَ عَنِ

कहा कि फिर मैंने ये मंसूर से बयान किया तो उन्होंने मुझसे इब्राहीम नख़ई से बयान किया, उनसे मसरूक़ ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने इसी तरह बयान किया। (राजेअ : 5675)

فَحَدَّثَنِي عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا بِنَحْوِهِ.

[راجع: ٥٦٧٥]

इस हदीष़ की रोशनी में लफ़्ज़ दस्ते शिफ़ा राइज हुआ है। कुछ हाथों में अल्लाह पाक ये अष़र रख देता है कि वो दम करें या कोई नुस्ख़ा लिखकर दें अल्लाह उनके ज़रिये से शिफ़ा देता है हर हकीम डॉक्टर वेद्य को ये ख़ूबी नहीं मिलती इल्ला माशाअल्लाह।

बाब 41 : हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जअफ़ी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ सन्आनी ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें उर्वा ने और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) अपने मर्ज़े वफ़ात में मुअव्वज़ात पढ़कर फूँकते थे फिर जब आपके लिये ये दुश्वार हो गया तो मैं आप पर दम किया करती थी और बरकत के लिये आँहज़रत (ﷺ) का हाथ आपके जिस्म पर फेरती थी (मअमर ने बयान किया कि) फिर मैंने इब्ने शिहाब से सवाल किया कि आँहज़रत (ﷺ) किस तरह दम किया करते थे? उन्होंने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) पहले अपने दोनों हाथों पर फूँक मारते फिर उनको चेहरे पर फेर लेते। (राजेअ : 4439)

٤١- باب فِي الْمَرْأَةِ تَرْقِي الرَّجُلَ

٥٧٥١- حدَّثني عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَنْفِثُ عَلَى نَفْسِهِ فِي مَرَضِهِ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ، فَلَمَّا ثَقُلَ كُنْتُ أَنَا أَنْفِثُ عَلَيْهِ بِهِنَّ وَأَمْسَحُ بِيَدِ نَفْسِهِ لِبَرَكَتِهَا فَسَأَلْتُ ابْنَ شِهَابٍ كَيْفَ كَانَ يَنْفِثُ قَالَ: يَنْفِثُ عَلَى يَدَيْهِ ثُمَّ يَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهُ.

[راجع: ٤٤٣٩]

इस तरह मुअव्विज़ात की ताष़ीर हाथों में अष़र करके फिर चेहरे पर भी ताष़्षुरात पैदा कर देती है जो चेहरे से नुमायाँ होने लगते हैं इसलिये मुअव्विज़ात का दम करना और हाथों को चेहरे पर फेरना भी मस्नून है।

बाब 42 : दम झाड़ न कराने की फ़ज़ीलत

٤٢- باب مَنْ لَمْ يَرْقِ

तश्रीह : हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं **क़ाल इब्नुल्अष़ीर हाज़ा मिन सिफ़ातिल्औलियाइल्मूमिनीन अनिद्दुनिया व अस्बाबिहा व अलाइक़िहा व हाउलाइ हुम अख़स्सुल्औलिया व ला यरिदु हाज़ा वुक़ूउ ज़ालिक मिनन्नबिय्यि (ﷺ) फ़िअलन व अम्रन लिअन्नहू कान फ़ी आला मक़ामातिज़्ज़मानि व दरजातित्तवक्कुलि फकान ज़ालिक मिन्हु तश्रीउन व बयानुल्जवाज़** (फ़त्ह) या'नी ये औलिया अल्लाह की सिफ़त है जो दुनिया और अस्बाब व अलाइक़े दुनिया से बिलकुल मुँह मोड़ लेते हैं और ये ख़ासुल ख़ास औलिया होते हैं। इससे उस पर कोई शुब्हा वारिद नहीं किया जा सकता है कि आँहज़रत (ﷺ) से दम झाड़ करना कराना और उसके लिये हुक्म फ़र्माना ष़ाबित है चूँकि आँहज़रत (ﷺ) को इरफ़ान और तवक्कल के आलातरीन दरजात हासिल हैं पस आपने शरीअत में ऐसे उमूर बतौर जवाज़ के ख़ुद किये और बतलाए।

5752. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन बिन नुमैर ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक दिन हमारे पास बाहर

٥٧٥٢- حدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حُصَيْنُ بْنُ نُمَيْرٍ عَنْ حُصَيْنِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ

عَنْهُمَا قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا فَقَالَ: ((عُرِضَتْ عَلَيَّ الأُمَمُ فَجَعَلَ يَمُرُّ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَعَهُ الرَّجُلُ وَالنَّبِيُّ مَعَهُ الرَّجُلاَنِ وَالنَّبِيُّ مَعَهُ الرَّهْطُ وَالنَّبِيُّ لَيْسَ مَعَهُ أَحَدٌ وَرَأَيْتُ سَوَادًا كَثِيرًا سَدَّ الأُفُقَ فَرَجَوْتُ أَنْ تَكُونَ أُمَّتِي، فَقِيلَ: هَذَا مُوسَى وَقَوْمُهُ، ثُمَّ قِيلَ لِي انْظُرْ فَرَأَيْتُ سَوَادًا كَثِيرًا سَدَّ الأُفُقَ فَقِيلَ لِي، انْظُرْ هَكَذَا وَهَكَذَا، فَرَأَيْتُ سَوَادًا كَثِيرًا سَدَّ الأُفُقَ فَقِيلَ: هَؤُلاَءِ أُمَّتُكَ وَمَعَ هَؤُلاَءِ سَبْعُونَ أَلْفًا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ)) فَتَفَرَّقَ النَّاسُ وَلَمْ يُبَيِّنْ لَهُمْ فَتَذَاكَرَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالُوا: أَمَّا نَحْنُ فَوُلِدْنَا فِي الشِّرْكِ وَلَكِنَّا آمَنَّا بِاللهِ وَرَسُولِهِ وَلَكِنْ هَؤُلاَءِ هُمْ أَبْنَاؤُنَا فَبَلَغَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((هُمُ الَّذِينَ لاَ يَتَطَيَّرُونَ وَلاَ يَكْتَوُونَ وَلاَ يَسْتَرْقُونَ وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ)). فَقَامَ عُكَّاشَةُ بْنُ مِحْصَنٍ فَقَالَ: أَمِنْهُمْ أَنَا يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). فَقَامَ آخَرُ فَقَالَ: أَمِنْهُمْ أَنَا؟ فَقَالَ: ((سَبَقَكَ بِهَا عُكَّاشَةُ)).

[راجع: ٣٤١٠]

तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि (ख़्वाब मे) मुझ पर तमाम उम्मतें पेश की गईं। कुछ नबी गुज़रते और उनके साथ (उनकी इत्तिबाअ करने वाला) सिर्फ़ एक होता। कुछ गुज़रते और उनके साथ दो होते कुछ के साथ पूरी जमाअत होती और कुछ के साथ कोई भी न होता फिर मैंने एक बड़ी जमाअत देखी जिससे आसमान का किनारा ढंक गया था मैं समझा कि ये मेरी ही उम्मत होगी लेकिन मुझसे कहा गया कि ये ह़ज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) और उनकी उम्मत के लोग हैं फिर मुझसे कहा कि देखो मैंने एक बहुत बड़ी जमाअत देखी जिसने आसमानों का किनारा ढांप लिया है। फिर मुझसे कहा गया कि उधर देखो, उधर देखो, मैंने देखा कि बहुत सी जमाअतें हैं जो तमाम उफ़ुक़ पर मुहीत़ थीं। कहा गया कि ये तुम्हारी उम्मत है और उसमें से सत्तर ह़ज़ार वो लोग होंगे जो बे ह़िसाब जन्नत में दाख़िल किये जाएँगे फिर स़हाबा मुख़्तलिफ़ जगहों में उठकर चले गये और आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसकी वज़ाह़त नहीं की कि ये सत्तर ह़ज़ार कौन लोग होंगे। स़हाबा किराम (रज़ि.) ने आपस में उसके बारे में मुज़ाकिरा किया और कहा कि हमारी पैदाइश तो शिर्क में हुई थी अल्बत्ता बाद में हम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आए लेकिन ये सत्तर ह़ज़ार हमारे बेटे होंगे जो पैदाइश ही से मुसलमान हैं। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये बात पहुँची तो आपने फ़र्माया कि ये सत्तर ह़ज़ार वो लोग होंगे जो बदफ़ाली नहीं करते, न मंतर से झाड़ फूँक कराते हैं और न दाग़ लगाते हैं बल्कि अपने रब पर भरोसा करते हैं। ये सुनकर ह़ज़रत उक्काशा बिन मिह़सन (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं भी उनमें से हूँ? फ़र्माया कि हाँ। एक दूसरे स़ाह़ब ह़ज़रत सअ़द बिन उबादा (रज़ि.) ने खड़े होकर अ़र्ज़ किया मैं भी उनमें से हूँ? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उक्काशा तुमसे बाज़ी ले गए कि तुमसे पहले उक्काशा के लिये जो होना था वो हो चुका। (राजेअ़ : 3410)

तश्रीह : ये सत्तर ह़ज़ार बड़े बड़े स़हाबा और औलिया-ए-उम्मत होंगे वरना उम्मते मुह़म्मदिया तो करोड़ों अरबों गुज़र चुकी है और हर वक़्त दुनिया में करोड़ों-करोड़ रहती है। सत्तर ह़ज़ार का उन अरबों में क्या शुमार। बहरह़ाल उम्मते मुह़म्मदी तमाम उम्मतों से ज़्यादा होगी और आप अपनी उम्मत की ये कष़रत देखकर फ़ख़्र करेंगे। या अल्लाह! आपकी

सच्ची उम्मत में हमारा भी ह़श्र फ़र्माइयो और आपका ह़ौज़े कौष़र पर दीदार नसीब कीजियो आमीन या रब्बल आ़लमीन।

बाब 43 : बदशगुनी लेने का बयान

٤٣- باب الطِّيَرَةِ

जिसे अ़रबी में त़यरह कहते हैं अ़रब लोग जब किसी काम के लिये बाहर निकलते तो परिन्दा उड़ाते अगर वो दाईं त़रफ़ उड़ता तो नेक फ़ाल समझते। अगर बाईं त़रफ़ उड़ता तो मन्हूस जानकर वापस लौट आते। जाहिल लोग आजकल भी ऐसे ख़यालाते फ़ासिदा में मुब्तला हैं।

5753. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे उ़ष़मान बिन उ़मर ने, कहा कि हमसे यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने, उनसे सालिम ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अम्राज़ में छूतछात की और बदशगुनी की कोई अस़्ल नहीं और अगर नहूसत होती तो ये सिर्फ़ तीन चीज़ों में होती है। औरत में, घर में और घोड़े में। (राजेअ़: 2099)

٥٧٥٣- حدّثني عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: لاَ عَدْوَى، وَلاَ طِيَرَةَ، وَالشُّؤْمُ فِي ثَلاَثٍ: فِي الْمَرْأَةِ، وَالدَّارِ، وَالدَّابَّةِ.[راجع: ٢٠٩٩]

तश्रीह : बदशगुनी के बेकार होने पर सब अ़क़्ल वालों का इत्तिफ़ाक़ है मगर छूत के मामले में कुछ डॉक्टर इख़्तिलाफ़ करते हैं और कहते हैं तजुर्बे से मा'लूम होता है कि कुछ बीमारियाँ छूत वाली होती हैं मष़लन जुज़ाम और त़ाऊ़न वग़ैरह। हम कहते हैं कि ये तुम्हारा वहम है अगर वो दरह़क़ीक़त मुतअ़द्दी होते तो एक घर के या एक शहर के सब लोग मुब्तला हो जाते मगर ऐसा नहीं होता बल्कि एक घर में ही कुछ लोग बीमार होते और कुछ तन्दुरुस्त रह जाते हैं जैसा कि आ़म मुशाहिदा है।

5754. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा हमको उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बदशगुनी की कोई अस़्ल नहीं अल्बत्ता नेक फ़ाल लेना कुछ बुरा नहीं है। स़ह़ाबा किराम (ﷺ) ने अ़र्ज़ किया नेक फ़ाल क्या चीज़ है? फ़र्माया कोई ऐसी बात सुनना। (दीगर मक़ामात : 5755)

٥٧٥٤- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنُ عُتْبَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ طِيَرَةَ وَخَيْرُهَا الْفَألُ)) قَالُوا وَمَا الْفَألُ؟ قَالَ: ((الْكَلِمَةُ الصَّالِحَةُ يَسْمَعُهَا أَحَدُكُمْ)).

[طرفه في : ٥٧٥٥].

मष़लन बीमार आदमी सलामती तन्दरुस्ती का सुन पाए या लड़ाई पर जाने वाला शख़्स रास्ते में किसी ऐसे शख़्स से मिले जिसका नाम फ़तह़ ख़ाँ हो उससे फ़ाले नेक लिया जा सकता है कि लड़ाई में फ़तह़ हमारी होगी, इंशाअल्लाह तआ़ला।

बाब 44 : नेक फ़ाल लेना कुछ बुरा नहीं है

٤٤- بَابُ الْفَألِ

5755. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह

٥٧٥٥- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِي

इमाम मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि दो औरतें थीं। एक ने दूसरी को पत्थर दे मारा जिससे उसके पेट का हमल गिर गया। आँहज़रत (ﷺ) ने इस मामले में एक ग़ुलाम या बाँदी दियत में दिये जाने का फ़ैसला किया। (राजेअ : 5758)

شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ امْرَأَتَيْنِ رَمَتْ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى بِحَجَرٍ فَطَرَحَتْ جَنِينَهَا فَقَضَى فِيهِ النَّبِيُّ ﷺ بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ.
[راجع: ٥٧٥٨]

5760. और इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे हज़रत सईद बिन मुसय्यिब ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जनीन जिसे उसकी माँ के पेट में मार डाला गया हो, की दियत के तौर पर एक ग़ुलाम या एक बाँदी दिये जाने का फ़ैसला किया था जिसे दियत देनी थी उसने कहा कि ऐसे बच्चे की दियत आख़िर क्यूँ दूँ जिसने न खाया, न पिया, न बोला और न विलादत के वक़्त ही आवाज़ निकाली? ऐसी सूरत में तो दियत नहीं हो सकती। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये शख़्स तो काहिनों का भाई मा'लूम होता है। (राजेअ : 5758)

٥٧٦٠- وَعَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَضَى فِي الْجَنِينِ يُقْتَلُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ وَلِيدَةٍ فَقَالَ: الَّذِي قُضِيَ عَلَيْهِ كَيْفَ أَغْرَمُ مَا لاَ أَكَلَ وَلاَ شَرِبَ وَلاَ نَطَقَ وَلاَ اسْتَهَلَّ؟ وَمِثْلُ ذَلِكَ بَطَلَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّمَا هَذَا مِنْ إِخْوَانِ الْكُهَّانِ)).
[راجع: ٥٧٥٨]

तश्रीह : जो कुछ आँहज़रत (ﷺ) ने फ़ैसला फ़र्माया वही बरहक़ था बाक़ी उस शख़्स की हफ़्वात थीं जिनको आँहुज़ूर (ﷺ) ने कहानत से तश्बीह देकर मिष्ले कहानत के बातिल ठहरा दिया (ﷺ)।

5761. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान इब्ने उ़ययना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन हारिष़ ने और उनसे अबू मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने कुत्ते की क़ीमत, ज़िना की उजरत और काहिन की कहानत की वजह से मिलने वाले हदिये से मना फ़र्माया है। (राजेअ : 2237)

٥٧٦١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ وَمَهْرِ الْبَغِيِّ وَحُلْوَانِ الْكَاهِنِ.
[راجع: ٢٢٣٧]

तश्रीह : या'नी एक मोमिन मुसलमान के लिये उनका खाना लेना ह़राम है। कुत्ते की क़ीमत, ज़ानिया औरत की उजरत और काहिनों के तोहफ़े उनका लेना और खाना सरासर ह़राम है।

5762. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें यह्या बिन उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने, उन्हें उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से काहिनों के बारे में पूछा

٥٧٦٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ يَحْيَى بْنِ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا

5762. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें यह्या बिन उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने, उन्हें उ़र्वा ने और उनसे हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से काहिनों के बारे में पूछा

٥٧٦٢- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبدِ اللهِ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ يَحْيَى بْنِ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا

आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी कोई बुनियाद नहीं। लोगों ने कहा कि, या रसूलल्लाह (ﷺ)! कुछ औक़ात वो हमें ऐसी चीज़ें भी बताते हैं जो स़हीह हो जाती हैं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये कलिमा ह़क़ होता है। उसे काहिन किसी जिन्नी से सुन लेता है वो जिन्नी अपने दोस्त काहिन के कान में डाल जाता है और फिर ये काहिन उसके साथ सौ झूठ मिलाकर बयान करते हैं। अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ इस कलिमे तिल्कल कलिमतु मिनल ह़क़ को मुर्सलन रिवायत करते थे फिर उन्होंने कहा मुझको ये ख़बर पहुँची कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने उसके बाद उसको मुस्नदन हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 3210)

قَالَتْ: سَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَاسٌ عَنِ الْكُهَّانِ فَقَالَ: ((لَيْسَ بِشَيْءٍ)) فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّهُمْ يحدثوننا أَحْيَانًا بِشَيْءٍ يَكُونُ حقًا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((تِلْكَ الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ يَخْطَفُهَا الْجِنِّيُّ فَيُقِرُّهَا فِي أُذُنِ وَلِيِّهِ فَيَخْلِطُونَ مَعَهَا مِائَةَ كَذِبَةٍ)). قَالَ عَلِيٌّ قَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: مُرْسَلٌ. الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ ثُمَّ بَلَغَنِي أَنَّهُ أَسْنَدَهُ بَعْدَهُ. [راجع: ٣٢١٠]

तश्रीह : क़स्तलानी (रह़.) ने कहा ये कहानत या'नी शैतान जो आसमान पर जाकर फ़रिश्तों की बात उड़ा लेते थे, आँह़ज़रत (ﷺ) की बिअ़षत से मौक़ूफ़ हो गई अब आसमान पर इतना शदीद पहरा है कि शैतान वहाँ फटकने नहीं पाते न अब वैसे काहिन मौजूद हैं जो शैतान से ता'ल्लुक़ रखते थे हमारे ज़माने के काहिन मह़ज़ अटकल पच्चू बात करते हैं।

قَالَتْ: سَأَلَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ نَاسٌ عَنِ الْكُهَّانِ فَقَالَ: ((لَيْسَ بِشَيْءٍ)) فَقَالُوا يَا رَسُوْلَ اللهِ إِنَّهُمْ يحدثوننا أَحْيَانًا بِشَيْءٍ فَيَكُوْنُ حقًا فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ((تِلْكَ الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ يَخْطَفُهَا الْجِنِّيُّ فَيَقُرُّهَا فِي أُذُنِ وَلِيِّهِ فَيَخْلِطُوْنَ مَعَهَا مِائَةَ كَذِبَةٍ)). قَالَ عَلِيٌّ قَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: مُرْسَلٌ. الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ ثُمَّ بَلَغَنِي أَنَّهُ أَسْنَدَهُ بَعْدَهُ. [راجع: ٣٢١٠]

आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी कोई बुनियाद नहीं। लोगों ने कहा कि, या रसूलल्लाह (ﷺ)! कुछ औक़ात वो हमें ऐसी चीज़ें भी बताते हैं जो सह़ीह़ हो जाती हैं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये कलिमा ह़क़ होता है। उसे काहिन किसी जिन्नी से सुन लेता है वो जिन्नी अपने दोस्त काहिन के कान में डाल जाता है और फिर ये काहिन उसके साथ सौ झूठ मिलाकर बयान करते हैं। अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ इस कलिमे तिल्कल कलिमतु मिनल ह़क़ को मुर्सलन रिवायत करते थे फिर उन्होंने कहा मुझको ये ख़बर पहुँची कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने उसके बाद उसको मुस्नदन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 3210)

तश्रीह : क़स्तलानी (रह़.) ने कहा ये कहानत या'नी शैतान जो आसमान पर जाकर फ़रिश्तों की बात उड़ा लेते थे, आँह़ज़रत (ﷺ) की बिअ़षत से मौक़ूफ़ हो गई अब आसमान पर इतना शदीद पहरा है कि शैतान वहाँ फटकने नहीं पाते न अब वैसे काहिन मौजूद हैं जो शैतान से ता'ल्लुक़ रखते थे हमारे ज़माने के काहिन मह़ज़ अटकल पच्चू बात करते हैं।

बाब 47 : जादू का बयान

٤٧- بابُ السِّحْرِ

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़रः में फ़र्माया, लेकिन शैतान काफ़िर हो गये वही लोगों को सेह़र या'नी जादू सिखलाते हैं और उस इल्म की भी ता'लीम देते हैं जो मक़ामे बाबिल में दो फ़रिश्तों हारूत और मारूत पर उतारा गया था और वो दोनों किसी को भी इस इल्म की बातें नहीं सिखलाते थे जब तक ये न कह देते देखो अल्लाह ने हमको दुनिया में आज़माइश के लिये भेजा है तो जादू सीखकर काफ़िर मत बन। मगर लोग उन दोनों के इस त़रह़ कह देने पर भी उनसे वो जादू सीख ही लेते जिससे वो मर्द और उसकी बीवी के बीच जुदाई डाल देते हैं और ये जादूगर जादू की वजह से बग़ैर अल्लाह के हुक्म के किसी को नुक़्सान नहीं पहुँचा सकते। ग़र्ज़ वो इल्म सीखते हैं जिससे फ़ायदा तो कुछ नहीं उल्टा नुक़्सान है और यहूदियों को भी मा'लूम है कि जो कोई जादू सीखे उसका आख़िरत में कोई ह़िस्सा न रहा। और सूरह त़ाहा में फ़र्माया कि, जादूगर जहाँ भी जाए कमबख़्त बामुराद नहीं होता। और सूरह अंबिया में फ़र्माया, क्या तुम देख समझकर जादू की पैरवी करते हो, और सूरह त़ाहा में फ़र्माया कि ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को उनके जादू की वजह से ऐसा मा'लूम होता था कि वो रस्सियाँ और लाठियाँ सांप की त़रह़ दौड़ रही हैं और सूरह फ़लक़ में फ़र्माया और बदी है उन औरतों की जो गिरहों में फूँक मारती हैं। और सूरह मोमिनून में फ़र्माया **फ़इन्ना तस्ह़रून** या'नी फिर तुम पर जादू की मार है।

٥٧٦٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَحَرَ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي زُرَيْقٍ يُقَالُ لَهُ لَبِيدُ بْنُ

5763. हमसे इब्राहीम बिन मूसा अशअ़री ने बयान किया, कहा हमको ईसा बिन यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन उ़र्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बनी ज़ुरैक़ के एक शख़्स यहूदी लबीद बिन आ़स़म ने रसूलुल्लाह (ﷺ) पर जादू कर दिया था और उसकी वजह से आँह़ज़रत (ﷺ) किसी चीज़ के बारे में ख़्याल करते कि आपने वो काम कर लिया है ह़ालाँकि आपने वो काम न

सालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ यहूदी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए और कहा अस्सामु अलैकुम (तुम्हें मौत आए) मैं उसका माना समझ गई और मैंने उनका जवाब दिया कि व अलैकुमुस्सामु वल्लअनतु (या'नी तुम्हें मौत आए और ला'नत हो) बयान किया कि उस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ठहरो, ऐ आइशा! अल्लाह तआला तमाम मामलात में नर्मी और मुलाइमत को पसंद करता है। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आपने सुना नहीं उन्होंने क्या कहा था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने उसका जवाब दे दिया था कि व अलैकुम (और तुम्हें भी) (राजेअ : 2935)

ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: دَخَلَ رَهْطٌ مِنَ الْيَهُودِ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالُوا: السَّامُ عَلَيْكُمْ قَالَتْ عَائِشَةُ: فَفَهِمْتُهَا فَقُلْتُ: وَعَلَيْكُمْ السَّامُ وَاللَّعْنَةُ، قَالَتْ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَهْلاً يَا عَائِشَةُ إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الرِّفْقَ فِي الأَمْرِ كُلِّهِ)). فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ أَوَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالُوا؟ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قَدْ قُلْتُ وَعَلَيْكُمْ)).

[راجع: ٢٩٣٥]

6025. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे षाबित ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि एक देहाती ने मस्जिद में पेशाब कर दिया था। सहाबा किराम उनकी तरफ़ दौड़े लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया उसके पेशाब को मत रोको। फिर आपने पानी का डोल मंगवाया और वो पेशाब की जगह पर बहा दिया गया।

٦٠٢٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ أَعْرَابِيًّا بَالَ فِي الْمَسْجِدِ فَقَامُوا إِلَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تُزْرِمُوهُ)) ثُمَّ دَعَا بِدَلْوٍ مِنْ مَاءٍ فَصُبَّ عَلَيْهِ.

तश्रीह : अख़्लाक़े मुहम्मदी का एक नमूना इस हदीष से ही ज़ाहिर है कि देहाती ने मस्जिद के कोने में पेशाब कर दिया मगर आपने उसे रोकने के बजाय उस पर पानी डलवा दिया बाद में बड़ी नर्मी से उसे समझा दिया। (ﷺ)

बाब 36 : एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान की मदद करना

٣٦- باب تَعَاوُنِ الْمُؤْمِنِينَ بَعْضِهِمْ بَعْضًا

6026. हमसे मुहम्मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा बुरैद बिन अबी बुर्दा ने कहा कि मुझे मेरे दादा अबू बुर्दा ने ख़बर दी, उनसे उनके वालिद अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये इस तरह है जैसे इमारत कि उसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से को थामे रहता है (गिरने नहीं देता) फिर आपने अपनी उँगलियों को क़ैंची की तरह कर लिया। (राजेअ : 481)

٦٠٢٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، بُرَيْدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَدِّي أَبُو بُرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ، يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا)) ثُمَّ شَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ. [راجع: ٤٨١]

तश्रीह : ग़ीबत ये कि पीठ पीछे किसी भाई की ऐसी ऐबजोई करे जो उसको नागवार हो ये ग़ीबत करना बदतरीन गुनाह है क़ाल इब्नुल अष़ीर फ़िन् नहायति ग़ीबत इन तज़्किरल इंसान फ़ी ग़ीबतही बिसूइन व इन काना फ़ीही (फ़त्ह)

6052. हमसे यह्या बिन मूसा बल्ख़ी ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उन्होंने मुजाहिद से सुना, वो ताउस से बयान करते थे और वो हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) दो क़ब्रों के पास से गुज़रे और फ़र्माया कि उन दोनों क़ब्रों के मुर्दों को अज़ाब हो रहा है और ये किसी बड़े गुनाह की वजह से अज़ाब में गिरफ़्तार नहीं हैं बल्कि ये (एक क़ब्र का मुर्दा) अपने पेशाब की छींटों से नहीं बचता था (या पेशाब करते वक़्त पर्दा नहीं करता था) और ये (दूसरी क़ब्र वाला मुर्दा) चुग़लख़ोर था, फिर आपने एक हरी शाख़ मंगाई और उसे दो टुकड़ों में फाड़कर दोनों क़ब्रों पर गाड़ दिया उसके बाद फ़र्माया कि जब तक ये शाख़ें सूख न जाएँ उस वक़्त तक शायद इन दोनों का अज़ाब हल्का रहे। (राजेअ : 216)

٦٠٥٢- حدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ قَالَ: سَمِعْتُ مُجَاهِدًا يُحَدِّثُ عَنْ طَاوُسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ الله عَنْهُمَا قَالَ: مَرَّ رَسُولُ الله ﷺ عَلَى قَبْرَيْنِ فَقَالَ: ((إِنَّهُمَا لَيُعَذَّبَانِ، وَمَا يُعَذَّبَانِ فِي كَبِيرٍ أَمَّا هَذَا فَكَانَ لاَ يَسْتَتِرُ مِنْ بَوْلِهِ، وَأَمَّا هَذَا فَكَانَ يَمْشِي بِالنَّمِيمَةِ)) ثُمَّ دَعَا بِعَسِيبٍ رَطْبٍ فَشَقَّهُ بِاثْنَيْنِ فَغَرَسَ عَلَى هَذَا وَاحِدًا وَعَلَى هَذَا وَاحِدًا، ثُمَّ قَالَ: ((لَعَلَّهُ يُخَفَّفُ عَنْهُمَا مَا لَمْ يَيْبَسَا)).
[راجع: ٢١٦]

तश्रीह : ये टहनी गाड़ने का अमल आपके साथ ख़ास था। इसलिये कि आपको क़ब्र वालों का सहीह हाल मा'लूम हो गया था और ये मा'लूम होना भी आप ही के साथ ख़ास था। आज कोई नहीं जान सकता कि क़ब्र वाला किस हाल में है, लिहाज़ा कोई अगर टहनी गाड़े तो वो बेकार है, वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

बाब : 47 नबी करीम (ﷺ) का फ़र्माना अंसार के सब घरों में फ़लाना घराना बेहतर है

٤٧- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ خَيْرُ دُورِ الأَنْصَارِ

इस बाब से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की अर्ज़ ये है कि किसी शख़्स की या क़ौम की फ़ज़ीलत बयान करना उसको दूसरे अश्ख़ास या अक़्वाम पर तरजीह देना ग़ीबत में दाख़िल नहीं है।

6053. हमसे क़ुबैसा बिन उक़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे हज़रत अबू उसैद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़बीला अंसार में सबसे बेहतर घराना बनू नज्जार का घराना है। (राजेअ : 3789)

٦٠٥٣- حدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((خَيْرُ دُورِ الأَنْصَارِ بَنُو النَّجَّارِ)).
[راجع: ٣٧٨٩]

बाब 48 : मुफ़्सिद और शरीर लोगों की या जिन पर गुमाने ग़ालिब बुराई का हो, उनकी ग़ीबत दुरुस्त होना

٤٨- باب مَا يَجُوزُ مِنْ اغْتِيَابِ أَهْلِ الْفَسَادِ وَالرِّيَبِ

ताकि दूसरे मुसलमान उनके बुराई से बचे रहें।

6054. हमसे सदक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको सुफ़यान बिन उय़यना ने ख़बर दी, उन्होंने मुहम्मद बिन मुंकदिर से सुना, उन्होंने उर्वा बिन ज़ुबैर से सुना और उन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अंदर आने की इजाज़त चाही तो आपने फ़र्माया कि उसे इजाज़त दे दो, फ़लाँ क़बीले का ये बुरा आदमी है। जब वो शख़्स अंदर आया तो आपने उसके साथ बड़ी नर्मी से बातचीत की, मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपको उसके बारे में जो कुछ कहना था वो इर्शाद फ़र्माया और फिर उसके साथ नर्म बातचीत की। आपने फ़र्माया, आइशा (रज़ि.)! वो आदमी है बदतरीन जिसे उसकी बदकलामी के डर से लोग छोड़ दें। (राजेअ: 6032)

٦٠٥٤- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، سَمِعْتُ ابْنَ الْمُنْكَدِرِ سَمِعَ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ قَالَتْ: اسْتَأْذَنَ رَجُلٌ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((ائْذَنُوا لَهُ بِئْسَ أَخُو الْعَشِيرَةِ، أَوِ ابْنُ الْعَشِيرَةِ)) فَلَمَّا دَخَلَ أَلاَنَ لَهُ الْكَلاَمَ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ قُلْتَ الَّذِي قُلْتَ: ثُمَّ أَلَنْتَ لَهُ الْكَلاَمَ؟ قَالَ : ((أَيْ عَائِشَةُ إِنَّ شَرَّ النَّاسِ مَنْ تَرَكَهُ النَّاسُ، أَوْ وَدَعَهُ النَّاسُ اتِّقَاءَ فُحْشِهِ)). [راجع: ٦٠٣٢]

ये हक़ीक़त थी कि वो बुरा आदमी है मगर मैं तो बुरा नहीं हूँ मुझे तो अपनी नेक आदत के मुताबिक़ हर बुरे भले आदमी के साथ नेक ख़ू, ही बरतनी होगी। सदक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ)।

बाब 49 : चुग़लख़ोरी करना कबीरा गुनाहों में से है

٤٩- بَابُ النَّمِيمَةُ مِنَ الْكَبَائِرِ

तश्रीह : व हिय नक़्लुन मक्रूहुन बिक़सदिल्इफ़सादि (अल्ख) (क़स्तलानी) या'नी फ़साद कराने के लिए किसी की बुराई किसी और के सामने नक़ल करना। चुग़लख़ोर एक साअत में इतना फ़साद फैला सकता है कि कोई जादूगर इतना फ़साद एक महीने में भी नहीं करा सकता, इसलिये ये कबीरा गुनाह है।

6055. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको उबैदह बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर बिन मअमर ने, उन्हें मुजाहिद ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मदीना मुनव्वरह के किसी बाग़ से तशरीफ़ लाए तो आपने दो (मुर्दा) इंसानों की आवाज़ सुनी जिन्हें उनकी क़ब्रों में अज़ाब दिया जा रहा था फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उन्हें अज़ाब हो रहा है और किसी बड़े गुनाह की वजह से उन्हें अज़ाब नहीं हो रहा है। उनमें से एक शख़्स पेशाब के छींटो से नहीं बचता था और दूसरा चुग़लख़ोर था। फिर आपने खजूर की एक हरी शाख़ मंगवाई और उसे दो हिस्सों में तोड़ा और एक टुकड़ा एक की क़ब्र पर और दूसरा दूसरी की क़ब्र पर गाड़ दिया। फिर फ़र्माया शायद कि उनके

٦٠٥٥- حَدَّثَنَا ابْنُ سَلاَمٍ، أَخْبَرَنَا عَبِيدَةُ بْنُ حُمَيْدٍ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ بَعْضِ حِيطَانِ الْمَدِينَةِ فَسَمِعَ صَوْتَ إِنْسَانَيْنِ يُعَذَّبَانِ فِي قُبُورِهِمَا فَقَالَ: ((يُعَذَّبَانِ وَمَا يُعَذَّبَانِ فِي كَبِيرَةٍ، وَإِنَّهُ لَكَبِيرٌ كَانَ أَحَدُهُمَا لاَ يَسْتَتِرُ مِنَ الْبَوْلِ، وَكَانَ الآخَرُ يَمْشِي بِالنَّمِيمَةِ)) ثُمَّ دَعَا بِجَرِيدَةٍ فَكَسَرَهَا بِكِسْرَتَيْنِ أَوْ ثِنْتَيْنِ فَجَعَلَ كِسْرَةً فِي قَبْرِ هَذَا وَكِسْرَةً فِي قَبْرِ

सलमा से सुना और उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (राजेअ : 6103)

أَبَا سَلَمَةَ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ [راجع: ٦١٠٣]

तश्रीह : जिसको काफ़िर कहा वो वाक़ई में काफ़िर है तब तो वो काफ़िर है और जब वो काफ़िर नहीं तो कहने वाला काफ़िर हो गया। इसीलिये अहले हदीष़ ने तक्फ़ीर में बड़ी एहतियात बरती है, वो कहते हैं कि हम किसी अहले क़िब्ला को काफ़िर नहीं कहते लेकिन बाद वाले फ़ुक़हा अपनी किताबों में अदना अदना बातों पर अपने मुख़ालिफ़ीन की तक्फ़ीर करते हैं, स़ाहिबे दुर्रे-मुख़्तार ने बड़ी जुर्अत (बहादुरी) से ये फ़त्वा दर्ज कर दिया, **फलअनतु रबिना इअदादु रम्लिन अला मन रद्द क़ौल अबी हनीफ़त** या'नी जो हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा के किसी क़ौल को रद्द कर दे उस पर इतनी ला'नत हो जितने दुनिया में ज़र्रात हैं। कहिये इस उसूल के मुवाफ़िक़ तो सारे अइम्मा-ए-दीन मल्ऊन ठहरे जिन्होंने बहुत से मसाइल में हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह़.) के क़ौल को रद्द किया है। ख़ुद हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह़.) के शागिर्दों ने कितने ही मसाइल में हज़रत इमाम से इख़्तिलाफ़ किया है तो क्या स़ाहिबे दुर्रे-मुख़्तार के नज़दीक वो भी सब मल्ऊन और मत्रूद थे। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह़.) को ऐसे लोगो ने पैग़म्बर समझ लिया है या आयत **इत्तख़जू अह़बारहुम व रुहबानहुम** के तहत उनको अल्लाह बना लिया है, हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह़.) एक आलिमे दीन थे, उनसे कितने ही मसाइल में ख़ता हुई वो मा'सूम नहीं थे। इस हदीष़ से उन लोगों को सबक़ लेना चाहिये जो बिला तह़क़ीक़ महज़ गुमान की बिना पर मुसलमानों को मुश्रिक या काफ़िर कह देते हैं। (वहीदी)

6104. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह़.) ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने, उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिस शख़्स ने भी अपने किसी भाई को कहा कि ऐ काफ़िर! तो उन दोनों में से एक काफ़िर हो गया।

٦١٠٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((أَيُّمَا رَجُلٍ قَالَ لأَخِيهِ: يَا كَافِرُ فَقَدْ بَاءَ بِهَا أَحَدُهُمَا)).

6105. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख़ितयानी ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने, उनसे ष़ाबित बिन ज़ह्हाक (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने इस्लाम के सिवा किसी और मज़हब की झूठ मूट क़सम खाई तो वो वैसा ही हो जाता है, जिसकी उसने क़सम खाई है और जिसने किसी चीज़ से ख़ुदकुशी कर ली तो उसे जहन्नम में उसी से अ़ज़ाब दिया जाएगा और मोमिन पर ला'नत भेजना उसे क़त्ल करने के बराबर है और जिसने किसी मोमिन पर कुफ़्र की तोह्मत लगाई तो ये उसके क़त्ल के बराबर है। (राजेअ : 1363)

٦١٠٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ ثَابِتِ بْنِ الضَّحَّاكِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَلَفَ بِمِلَّةٍ غَيْرِ الإِسْلاَمِ كَاذِبًا فَهُوَ كَمَا قَالَ: وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِشَيْءٍ عُذِّبَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ، وَلَعْنُ الْمُؤْمِنِ كَقَتْلِهِ، وَمَنْ رَمَى مُؤْمِنًا بِكُفْرٍ فَهُوَ كَقَتْلِهِ)). [راجع: ١٣٦٣]

किसी मज़हब पर क़सम खाना मष़लन यूँ कहा कि अगर मैं ने ये काम किया तो मैं यहूदी या नसरानी वग़ैर [illegible] ये बहुत बुरी क़सम है अआज़नल्लाहु मिन्हू

बाब 74 : अगर किसी ने कोई वजह मा'कूल रखकर किसी को काफ़िर कहा या नादानिस्ता तो वो काफ़िर होगा और हज़रत उमर (रज़ि.) ने

لَمْ يَرَ إِكْفَارَ مَنْ قَالَ لاَ وَقَالَ عُمَرُ لِحَاطِبٍ

बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुमैदी बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें से जिसने लात व उ़ज़्ज़ा की (या दूसरे बुतों की क़सम) खाई तो उसे ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ना चाहिये और जिसने अपने साथी से कहा कि आओ जुआ खेलें तो उसे बतौरे कफ़्फ़ारा सदक़ा देना चाहिये। (राजेअ़ : 4860)

الزُّهْرِيُّ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ حَلَفَ مِنْكُمْ فَقَالَ فِي حَلِفِهِ: بِاللاَّتِ وَالْعُزَّى فَلْيَقُلْ : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَمَنْ قَالَ لِصَاحِبِهِ : تَعَالَ أُقَامِرْكَ فَلْيَتَصَدَّقْ)). [راجع: ٤٨٦٠]

तश्रीह : लात व उ़ज़्ज़ा बुतों की क़सम वही लोग खा सकते हैं जो उनको मा'बूद जानते होंगे, लिहाज़ा अगर कोई मुसलमान ऐसी क़सम खा बैठे तो लाज़िम है कि वो दोबारा कलिमा तृय्यिबा पढ़कर ईमान की तज्दीद करे। ग़ैरुल्लाह में सब दाख़िल हैं बुत हों या अवतार या पैग़म्बर या शहीद या वली या फ़रिश्ते किसी भी बुत या हजर वग़ैरह की क़सम खाने वाला दोबारा कलिमा तृय्यिबा पढ़कर तज्दीदे ईमान के लिये मामूर है।

6108. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि वो हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के पास पहुँचे जो चंद सवारों के साथ थे, उस वक़्त हज़रत उ़मर (रज़ि.) अपने वालिद की क़सम खा रहे थे। उस पर रसूले करीम (ﷺ) ने उन्हें पुकारकर कहा, आगाह हो, यक़ीनन अल्लाह पाक तुम्हें मना करता है कि तुम अपने बाप दादों की क़सम खाओ, पस अगर किसी को क़सम ही खानी है तो वो अल्लाह की क़सम खाए, वरना चुप रहे। (राजेअ़ : 2679)

٦١٠٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ أَدْرَكَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ فِي رَكْبٍ وَهُوَ يَحْلِفُ بِأَبِيهِ فَنَادَاهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ إِنَّ اللهَ يَنْهَاكُمْ أَنْ تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ، فَمَنْ كَانَ حَالِفًا فَلْيَحْلِفْ بِاللهِ وَإِلاَّ فَلْيَصْمُتْ)).[راجع: ٢٦٧٩]

दूसरी हृदीष़ में आया है कि ग़ैरुल्लाह की क़सम खाना मना है अगर किसी की ज़ुबान से ग़ैरुल्लाह की क़सम निकल गई तो उसे कलिमा तौहीद पढ़कर फिर ईमान की तज्दीद करना चाहिये अगर कोई इरादतन किसी पीर या बुत की अ़ज़्मत मिष़्ले अ़ज़्मते इलाही के जानकर उनके नाम की क़सम खाएगा तो वो यक़ीनन मुश्रिक हो जाएगा एक हृदीष़ में जो अफ़्लह व अबीहि इन सदक़ के लफ़्ज़ आए हैं । ये हृदीष़ पहले की है। लिहाज़ा यहाँ क़सम का जवाज़ मन्सूख़ है।

बाब 75 : ख़िलाफ़े शरअ़ काम पर ग़ुस्सा और सख़्ती करना, और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया सूरह बरात में, कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन से जिहाद कर और उन पर सख़्ती कर

٧٥- بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ الْغَضَبِ وَالشِّدَّةِ لأَمْرِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ﴾.

6109. हमसे बुसरा बिन सफ़्वान ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे ज़ु ह्री ने बयान किया, उनसे क़ासिम ने बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) अंदर तशरीफ़ लाए और घर में एक पर्दा लटका हुआ था जिस पर तस्वीरें थीं। आँहज़रत (ﷺ) के चेहरे का रंग बदल गया, फिर

٦١٠٩- حَدَّثَنَا بُسَرَةُ بْنُ صَفْوَانَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ الْقَاسِمِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ عَلَى النَّبِيُّ ﷺ وَفِي الْبَيْتِ قِرَامٌ فِيهِ صُوَرٌ فَتَلَوَّنَ وَجْهُهُ ثُمَّ تَنَاوَلَ السِّتْرَ فَهَتَكَهُ وَقَالَتْ :

6118. हमसे अह्मद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू सलमा ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) का गुज़र एक शख़्स पर से हुआ जो अपने भाई पर ह़या की वजह से नाराज़ हो रहा था और कह रहा था कि तुम बहुत शर्माते हो, गोया वो कह रहा था कि तुम उसकी वजह से अपना नुक़्सान कर लेते हो। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि उसे छोड़ दो कि ह़या ईमान में से है। (राजेअ़ : 24)

٦١١٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى رَجُلٍ وَهُوَ يُعَاتِبُ أَخَاهُ فِي الْحَيَاءِ يَقُولُ: إِنَّكَ لَتَسْتَحْيِي حَتَّى كَأَنَّهُ يَقُولُ: قَدْ أَضَرَّ بِكَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((دَعْهُ فَإِنَّ الْحَيَاءَ مِنَ الإِيمَانِ)). [راجع: ٢٤]

6119. हमसे अ़ली बिन अल जअ़द ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें क़तादा ने, उन्हें अनस (रज़ि.) के ग़ुलाम क़तादा ने, अबू अ़ब्दुल्लाह ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि उनका नाम अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उ़त्बा है, मैंने अबू सईद से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) पर्दा में रहने वाली कुँवारी लड़की से भी ज़्यादा ह़या वाले थे। (राजेअ़ : 3562)

٦١١٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ مَوْلَى أَنَسٍ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ اسْمُهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي عُتْبَةَ : سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ يَقُولُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَشَدَّ حَيَاءً مِنَ الْعَذْرَاءِ فِي خِدْرِهَا. [راجع: ٣٥٦٢]

बाब 78 : जब ह़या न हो तो जो चाहो करो

٧٨- باب إِذَا لَمْ تَسْتَحِ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ.

6120. हमसे अह्मद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मंसूर ने बयान किया, उनसे रिब्ई बिन ख़राश ने बयान किया, उनसे अबू मसऊ़द अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगले पैग़म्बरों का कलाम जो लोगों को मिला उसमें ये भी है कि जब शर्म ही न रही तो फिर जो जी चाहे वो करो। (राजेअ़ : 3483)

٦١٢٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ مِمَّا أَدْرَكَ النَّاسُ مِنْ كَلاَمِ النُّبُوَّةِ الأُولَى إِذَا لَمْ تَسْتَحِ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ)). [راجع: ٣٤٨٣]

बाब 79 : शरीअ़त की बातें पूछने में शर्म न करना चाहिये

٧٩- باب مَا لاَ يُسْتَحْيَا مِنَ الْحَقِّ لِلتَّفَقُّهِ فِي الدِّينِ

6121. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने उनसे ज़ैनब बिन्ते अबी

٦١٢١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ

ने, उनसे हफ़्स बिन आसिम ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने इसी तरह बयान किया और ये इज़ाफ़ा किया कि फिर मैंने इसका ज़िक्र उमर (रज़ि.) से किया तो उन्होंने कहा अगर तुमने कह दिया होता तो मुझे इतना इतना माल मिलने से भी ज़्यादा ख़ुशी हासिल होती। (राजेअ : 61)

خُبَيْبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ مِثْلَهُ وَزَادَ فَحَدَّثْتُ بِهِ عُمَرَ، فَقَالَ: لَوْ كُنْتَ قُلْتَهَا لَكَانَ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْ كَذَا وَكَذَا.[راجع: ٦١]

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इसी रिवायत से बाब का मतलब निकाला कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने बेटे अब्दुल्लाह की इस शर्म को पसंद न किया जो दीन की बात बतलाने में उन्होंने की। बेमहल शर्म करना ग़लत है।

6123. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे मरहूम बिन अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने कहा कि मैंने साबित से सुना, और उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक ख़ातून नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अपने आपको आँहज़रत (ﷺ) के निकाह के लिये पेश किया और अर्ज़ किया, क्या आँहज़रत (ﷺ) को मुझसे निकाह की ज़रूरत है? इस पर अनस (रज़ि.) की साहबज़ादी बोलीं, वो कितनी बेहया थी। अनस (रज़ि.) ने कहा कि वो तुमसे तो अच्छी थीं उन्होंने अपने आपको आँहज़रत (ﷺ) के निकाह के लिये पेश किया। (राजेअ : 5120)

٦١٢٣– حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا مَرْحُومٌ، سَمِعْتُ ثَابِتًا أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ تَعْرِضُ عَلَيْهِ نَفْسَهَا فَقَالَتْ: هَلْ لَكَ حَاجَةٌ فِيَّ؟

ये सआदत कहाँ मिलती है कि आँहज़रत (ﷺ) किसी औरत को अपनी ज़ोजियत के लिये पसंद फ़र्माएँ।

बाब 80 : नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान कि आसानी करो, सख़्ती न करो, आप (ﷺ) लोगों पर तख़्फ़ीफ़ और आसानी को पसंद फ़र्माया करते थे

٨٠– بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يَسِّرُوا وَلاَ تُعَسِّرُوا)) وَكَانَ يُحِبُّ التَّخْفِيفَ وَالْيُسْرَ عَلَى النَّاسِ.

अल्लाह पाक हमारे उलमा और फ़ुक़हा को भी इस नबी (ﷺ) के तरीक़े पर अमल की तौफ़ीक़ दे जिन्होंने मिल्लते इस्लामिया को मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़ों में बांट करके उम्मत को बहुत सी मुश्किलात में मुब्तला कर रखा है।

6124. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन अबी बुर्दा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनके दादा ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें (अबू मूसा अशअरी रज़ि.) और मुआज़ बिन जबल को (यमन) भेजा तो उनसे फ़र्माया कि (लोगों के लिए) आसानियाँ पैदा करना, तंगी में न डालना, उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाना, दीन से नफ़रत न दिलाना और तुम दोनों आपस में इत्तिफ़ाक़ से काम करना, अबू मूसा

٦١٢٤– حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا النَّضْرُ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: لَمَّا بَعَثَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ قَالَ لَهُمَا: ((يَسِّرَا وَلاَ تُعَسِّرَا وَبَشِّرَا وَلاَ تُنَفِّرَا وَتَطَاوَعَا)) قَالَ أَبُو مُوسَى: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّا بِأَرْضٍ يُصْنَعُ فِيهَا شَرَابٌ مِنَ الْعَسَلِ يُقَالُ لَهُ

الْبِتْعُ وَشَرَابٌ مِنَ الشَّعِيرِ يُقَالُ لَهُ : الْمِزْرُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ)). [راجع: ٢٢٦١]

(रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! हम ऐसी सरज़मीन में जा रहे हैं जहाँ शहद से शराब बनाई जाती है और उसे बित्‌ड़ कहा जाता है और जौ से शराब बनाई जाती है और उसे मिज़्र कहा जाता है? आँहज़रत ने फ़र्माया कि हर नशा लाने वाली चीज़ हराम है। (राजेअ : 2261)

कोई शराब हो जो नशा करे वो हराम है।

٦١٢٥- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، قَالَ : سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَسِّرُوا وَلاَ تُعَسِّرُوا وَسَكِّنُوا وَلاَ تُنَفِّرُوا)).

6125. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने बयान किया, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, आसानी पैदा करो, तंगी न पैदा करो, लोगों को तसल्ली और तशफ़्फ़ी दो नफ़रत न दिलाओ।

٦١٢٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: مَا خُيِّرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَيْنَ أَمْرَيْنِ قَطُّ إِلاَّ أَخَذَ أَيْسَرَهُمَا مَا لَمْ يَكُنْ إِثْمًا، فَإِنْ كَانَ إِثْمًا كَانَ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنْهُ، وَمَا انْتَقَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِنَفْسِهِ فِي شَيْءٍ قَطُّ إِلاَّ أَنْ تُنْتَهَكَ حُرْمَةُ اللهِ فَيَنْتَقِمُ بِهَا لِلَّهِ. [راجع: ٣٥٦٠]

6126. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब भी रसूलुल्लाह (ﷺ) को दो चीज़ों में से एक को इख़्तियार करने का इख़्तियार दिया गया तो आपने हमेशा उनमें आसान चीज़ों को इख़्तियार किया, बशर्ते कि उसमें गुनाह का कोई पहलू न होता। अगर उसमें गुनाह का कोई पहलू होता तो आँहज़रत (ﷺ) उससे सबसे ज़्यादा दूर रहते और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अपनी ज़ात के लिये किसी से बदला नहीं लिया, अल्बत्ता अगर कोई शख़्स अल्लाह की हुर्मत वहृद को तोड़ता तो आँहज़रत (ﷺ) उनसे तो महज़ अल्लाह की रज़ामंदी के लिये बदला लेते। (राजेअ : 3560)

बज़ाहिर इस ह़दीष़ में इश्काल है क्योंकि जो काम गुनाह होता है उसके लिये आपको कैसे इख़्तियार दिया जाता, शायद ये मुराद हो कि काफ़िरों की तरफ़ से ऐसा इख़्तियार दिया जाता।

٦١٢٧- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنِ الأَزْرَقِ بْنِ قَيْسٍ، قَالَ: كُنَّا عَلَى شَاطِىءِ نَهْرٍ بِالأَهْوَازِ قَدْ نَضَبَ عَنْهُ الْمَاءُ فَجَاءَ أَبُو بَرْزَةَ الأَسْلَمِيُّ عَلَى فَرَسٍ فَصَلَّى وَخَلَّى فَرَسَهُ، فَانْطَلَقَتِ الْفَرَسُ فَتَرَكَ صَلاَتَهُ وَتَبِعَهَا حَتَّى أَدْرَكَهَا، فَأَخَذَهَا ثُمَّ جَاءَ فَقَضَى صَلاَتَهُ وَفِينَا رَجُلٌ

6127. हमसे अबुन नोअ़मान बिन फ़ज़्ल सदूसी ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अज़्रक़ बिन क़ैस ने कि अह्वाज़ नामी ईरानी शहर में हम एक नहर के किनारे थे जो ख़ुश्क पड़ी थी, फिर अबू बर्ज़ा असलमी स़हाबी घोड़े पर तशरीफ़ लाए और नमाज़ पढ़ी और घोड़ा छोड़ दिया। घोड़ा भागने लगा तो आपने नमाज़ तोड़ दी और उसका पीछा किया, आख़िर उसके क़रीब पहुँचे और उसे पकड़ लिया। फिर वापस आकर नमाज़ क़ज़ा की, वहाँ एक शख़्स

लग सकता।

وَاحِدٍ مَرَّتَيْنِ)).

एक ही बार धोखा खाता है फिर होशियार रहता है। सच कहा गया है कि,

आदमी बनता है लाखों ठोकरें खाने के बाद, रंग लाती है हिना पत्थर पे पिस जाने के बाद

बाब 84 : मेहमान के ह़क़ के बयान में

٨٤- باب حَقِّ الضَّيْفِ

6134. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे रौह़ बिन उ़बादा ने, कहा हमसे हुसैन ने, उनसे यह्या बिन अबीबक्र ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, क्या ये मेरी ख़बर स़ह़ीह़ है कि तुम रात भर इबादत करते रहते हो और दिन में रोज़े रखते हो? मैंने कहा कि जी हाँ ये स़ह़ीह़ है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐसा न करो, इबादत भी कर और सो भी, रोज़े भी रख और बिला रोज़े भी रह, क्योंकि तुम्हारे जिस्म का भी तुम पर ह़क़ है, तुम्हारी आँखों का भी तुम पर ह़क़ है, तुमसे मुलाक़ात के लिये आने वालों का भी तुम पर ह़क़ है, तुम्हारी बीवी का भी तुम पर ह़क़ है, उम्मीद है कि तुम्हारी उ़म्र लम्बी हो क्योंकि हर नेकी का बदला दस गुना मिलता है, इस त़रह़ ज़िंदगी भर का रोज़ा होगा। उन्होंने बयान किया कि मैंने सख़्ती चाही तो आपने मेरे ऊपर सख़्ती कर दी, मैंने अ़र्ज़ किया कि मैं इससे ज़्यादा की त़ाक़त रखता हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर हर हफ़्ते तीन रोज़ा रखा कर, बयान किया कि मैंने और सख़्ती चाही और आपने मेरे ऊपर और सख़्ती कर दी। मैंने अ़र्ज़ किया कि मैं इससे भी ज़्यादा की त़ाक़त रखता हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के नबी दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) जैसा रोज़ा रख। मैंने पूछा, अल्लाह के नबी दाऊद (अ़लैहि.) का रोज़ा कैसा था? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक दिन रोज़ा एक दिन इफ़्त़ार गोया आधी उ़म्र के रोज़े। (राजेअ़ : 1131)

٦١٣٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((أَلَمْ أُخْبَرْ أَنَّكَ تَقُومُ اللَّيْلَ وَتَصُومُ النَّهَارَ))، قُلْتُ: بَلَى قَالَ: ((فَلاَ تَفْعَلْ قُمْ وَنَمْ، وَصُمْ وَأَفْطِرْ، فَإِنَّ لِجَسَدِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِزَوْرِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّكَ عَسَى أَنْ يَطُولَ بِكَ عُمُرٌ، وَإِنَّ مِنْ حَسْبِكَ أَنْ تَصُومَ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ فَإِنَّ بِكُلِّ حَسَنَةٍ عَشْرَ أَمْثَالِهَا فَذَلِكَ الدَّهْرُ كُلُّهُ))، قَالَ فَشَدَّدْتُ فَشُدِّدَ عَلَيَّ قُلْتُ : فَإِنِّي أُطِيقُ غَيْرَ ذَلِكَ قَالَ: ((فَصُمْ مِنْ كُلِّ جُمْعَةٍ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ)) قَالَ: فَشَدَّدْتُ فَشُدِّدَ عَلَيَّ قُلْتُ : أُطِيقُ غَيْرَ ذَلِكَ قَالَ: ((فَصُمْ صَوْمَ نَبِيِّ اللهِ دَاوُدَ)) قُلْتُ: وَمَا صَوْمُ نَبِيِّ اللهِ دَاوُدَ؟ قَالَ : ((نِصْفُ الدَّهْرِ)).

[راجع: ١١٣١]

तश्रीह : आँह़ज़रत (ﷺ) के इस इर्शादे गिरामी का ह़ासिल ये है कि अल्लाह पाक ने इंसान को मिल्की और बहीमी दोनों त़ाक़तें देकर मअ़जूने मुरक्कब पैदा फ़र्माया है। अगर एक कुव्वत को बिलकुल तबाह करके इंसान फ़रिश्ता बन जाए तो गोया वो अपनी फ़ित़रत बिगाड़ता है। मंशा-ए-कुदरत ये है कि आदमी को आदमी ही रहना चाहिये, इ़बादते इलाही

है। पस अब जो कोई अल्लाह के सिवा किसी दूसरे से दुआ करे तो वो मुश्रिक होगा क्योंकि उसने ग़ैरुल्लाह की इबादत की और यही शिर्क है।

6304. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया हर नबी को एक दुआ ह़ासिल होती है (जो क़ुबूल की जाती है) और मैं चाहता हूँ कि मैं अपनी दुआ को आख़िरत में अपनी उम्मत की शफ़ाअत के लिये महफ़ूज़ रखूँ। (दीगर : 7474)

٦٣٠٤- حدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ يَدْعُو بِهَا، وَأُرِيدُ أَنْ أَخْتَبِيءَ دَعْوَتِي شَفَاعَةً لأُمَّتِي فِي الآخِرَةِ)).[طرفه في : ٧٤٧٤].

6305. और मुअतमिर ने बयान किया, उन्हों ने अपने वालिद से सुना, उन्होंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हर नबी ने कुछ चीज़ें मांगी या फ़र्माया कि हर नबी को एक दुआ दी गई जिस चीज़ की उसने दुआ मांगी फिर उसे क़ुबूल किया गया लेकिन मैंने अपनी दुआ क़यामत के दिन अपनी उम्मत की शफ़ाअत के लिये महफ़ूज़ रखी हुई है।

٦٣٠٥- قَالَ خَلِيفَةُ قال مُعْتَمِرٌ: سَمِعْتُ أَبِي، عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كُلُّ نَبِيٍّ سَأَلَ سُؤَالاً)) أَوْ قَالَ: ((لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ قَدْ دَعَا بِهَا فَاسْتُجِيبَ فَجَعَلْتُ دَعْوَتِي شَفَاعَةً لأُمَّتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

तश्रीह : **क़ाल इब्नु बत्ताल फ़ी हाज़ल्हदीषि बयानु फज़्लि नबय्यिना** अल् अख़। या'नी इस ह़दीष़ में हमारे नबी (ﷺ) की फ़ज़ीलत बयान की गई है जो आपको तमाम रसूलों पर ह़ासिल है कि आपने उस मख़्सूस दुआ के लिये अपने नफ़्स पर सारी उम्मत और अपने अहले बैत के लिये ईष़ार फ़र्माया। नववी (रह़.) ने कहा कि इसमें आपकी तरफ़ से उम्मत पर कमाले शफ़क़त का इज़्हार है इसमें उन पर भी दलील है कि अहले सुन्नत मे से जो शख़्स तौह़ीद पर मरा वो दोज़ख़ में हमेशा नहीं रहेगा अगरचे वो कबाइर पर इस़रार करता हुआ मर जाए। (फ़त्हुल बारी)

बाब 2 : इस्तिग़फ़ार के लिये अफ़ज़ल दुआ का बयान

٢- باب أَفْضَلِ الاسْتِغْفَارِ

और अल्लाह तआला ने सूरह नूह में फ़र्माया, अपने रब से बख़्शिश मांगो वो बड़ा बख़्शने वाला है तुम ऐसा करोगे तो वो आसमान के दहाने खोल देगा और माल और बेटों से तुमको सरफ़राज़ करेगा और बाग़ अ़ता करेगा और नहरें इनायत करेगा। और सूरह आले इमरान में फ़र्माया, बहिश्त उन लोगों के लिये तैयार की गई है जिनसे कोई बेह़याई का काम हो जाता है या कोई गुनाह सरज़द होता है तो अल्लाह पाक को याद करके अपने गुनाहों की बख़्शिश चाहते हैं और अल्लाह के सिवा कौन है जो गुनाहों को बख़्शे और वो अपने बुरे कामों पर जान बूझकर हठधर्मी नहीं करते हैं। (आले इमरान : 135)

وَقَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا. يُرْسِلُ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا. وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّاتٍ، وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا﴾ [نوح: ١٠]. ﴿وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ اللهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَى مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ﴾ [آل عمران : ١٣٥].

6306. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल

٦٣٠٦- حدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا

वारिष़ बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन बिन ज़क्वान मुअल्लिम ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदह ने बयान किया, उनसे बशीर बिन कअ़ब अ़दवी ने कहा कि मुझसे शद्दाद बिन औस (रज़ि.) ने बयान किया, और उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कि सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार (मग़्फ़िरत मांगने के सब कलिमात का सरदार) ये है कि यूँ कहे, ऐ अल्लाह! तू मेरा रब है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। तूने ही मुझे पैदा किया और मैं तेरा ही बन्दा हूँ मैं अपनी त़ाक़त के मुत़ाबिक़ तुझसे किये हुए अ़हद और वादे पर क़ायम हूँ। उन बुरी हरकतों के अ़ज़ाब से जो मैंने की हैं तेरी पनाह मांगता हूँ, मुझ पर नेअ़मतें तेरी हैं इसका इक़रार करता हूँ। मेरी मग़्फ़िरत कर दे कि तेरे सिवा और कोई भी गुनाह मुआफ़ नहीं करता। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने इस दुआ के अल्फ़ाज़ पर यक़ीन रखते हुए दिल से इनको कह लिया और उसी दिन उसका इंतिक़ाल हो गया शाम होने से पहले तो वो जन्नती है और जिसने इस दुआ के अल्फ़ाज़ पर यक़ीन रखते हुए रात में इनको पढ़ लिया और फिर उसका सुबह होने से पहले इंतिक़ाल हो गया तो वो जन्नती है।

عبدُالوارثِ، حَدَّثَنا الْحُسَيْنُ، حَدَّثَنا عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ، عَنْ بَشِيرِ بْنُ كَعْبٍ الْعَدَوِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنِي شَدَّادُ بْنُ أَوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((سَيِّدُ الاِسْتِغْفَارِ أَنْ تَقُولَ : اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوءُ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ، قَالَ: وَمَنْ قَالَهَا مِنَ النَّهَارِ مُوقِنًا بِهَا فَمَاتَ مِنْ يَوْمِهِ، قَبْلَ أَنْ يُمْسِيَ فَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، وَمَنْ قَالَهَا مِنَ اللَّيْلِ وَهُوَ مُوقِنٌ بِهَا فَمَاتَ قَبْلَ أَنْ يُصْبِحَ فَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ

बाब 3 : दिन और रात नबी करीम (ﷺ) का इस्तिग़फ़ार करना

٣- باب اسْتِغْفَارِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ

तश्रीह : आँह़ज़रत (ﷺ) का ये इस्तिग़फ़ार और तौबा करना इज़्हारे अ़ब्दियत के लिये था या दुनिया की ता'लीम के लिये या बरत़रीक़े तवाज़ोअ़ या इसलिये कि आपकी तरक़्क़ी दरजात हर वक़्त होती रहती तो हर मर्तबा आ़ला पहुँचकर मर्तब-ए-औला से इस्तिग़फ़ार करते। सत्तर बार से मुराद ख़ास़ अ़दद है या बहुत होना। अ़रबों की आ़दत है जब कोई चीज़ बहुत बार की जाती है तो उसको सत्तर बार कहते हैं। इमाम मुस्लिम की रिवायत में सौ बार मज़्कूर है।

6307. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने कहा कि मुझे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी उन्होंने कहा कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह की क़सम! मैं दिन में सत्तर मर्तबा से ज़्यादा अल्लाह से इस्तिग़फ़ार और उससे तौबा करता हूँ।

٦٣٠٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((وَاللهِ إِنِّي لأَسْتَغْفِرُ اللهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فِي الْيَوْمِ أَكْثَرَ مِنْ سَبْعِينَ مَرَّةً)).

बाब 4 : तौबा का बयान

٤- باب التَّوْبَةِ

شَكَتْ مَا تَلْقَى فِي يَدِهَا مِنَ الرُّحَى فَأَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ تَسْأَلُهُ خَادِمًا فَلَمْ تَجِدْهُ فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لِعَائِشَةَ فَلَمَّا جَاءَ أَخْبَرَتْهُ قَالَ: فَجَاءَنَا وَقَدْ أَخَذْنَا مَضَاجِعَنَا، فَذَهَبْتُ أَقُومُ فَقَالَ: ((مَكَانَكِ)) فَجَلَسَ بَيْنَنَا حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَ قَدَمَيْهِ عَلَى صَدْرِي، فَقَالَ : ((أَلاَ أَدُلُّكُمَا عَلَى مَا هُوَ خَيْرٌ لَكُمَا مِنْ خَادِمٍ؟ إِذَا أَوَيْتُمَا إِلَى فِرَاشِكُمَا أَوْ أَخَذْتُمَا مَضَاجِعَكُمَا فَكَبِّرَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَسَبِّحَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَاحْمَدَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، فَهَذَا خَيْرٌ لَكُمَا مِنْ خَادِمٍ))، وَعَنْ شُعْبَةَ عَنْ خَالِدٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ قَالَ التَّسْبِيحُ أَرْبَعٌ ثَلاَثُونَ.[راجع: ٣١١٣]

वजह से कि उनके मुबारक हाथ को स़दमा पहुँचता है तो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में एक ख़ादिम मांगने के लिये हाज़िर हुईं। आँह़ज़रत (ﷺ) घर में मौजूद नहीं थे। इसलिये उन्होंने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से ज़िक्र किया। जब आप तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने आपसे इसका ज़िक्र किया। ह़ज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आँह़ज़रत (ﷺ) हमारे यहाँ तशरीफ़ लाए हम उस वक़्त तक अपने बिस्तरों पर लेट चुके थे, मैं खड़ा होने लगा तो आपने फ़रमाया कि क्या मैं तुम दोनों को वो चीज़ें न बता दूँ जो तुम्हारे लिये ख़ादिम से भी बेहतर हो। जब तुम अपने बिस्तर पर जाने लगो तो तैंतीस मर्तबा अल्लाहु अकबर तैंतीस मर्तबा सुब्ह़ानल्लाह और तैंतीस मर्तबा अल्ह़म्दुलिल्लाह कहो, ये तुम्हारे लिये ख़ादिम से बेहतर है और शुअ़बा से रिवायत है उनसे ख़ालिद ने, उनसे इब्ने सीरीन ने बयान किया कि सुब्ह़ानल्लाह चौंतीस मर्तबा कहो। (राजेअ़ : 3113)

तश्रीह : मुस्लिम की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपनी शहज़ादी स़ाह़िबा से पूछा मैंने सुना है कि तुम मुझसे मिलने को आई थी लेकिन मैं नहीं था कहो क्या काम है? उन्होंने अ़र्ज़ किया ह़ज़रत अब्बाजान मैंने सुना है कि आपके पास लौण्डी और ग़ुलाम आए हैं। एक ग़ुलाम या लौण्डी हमको भी दे दीजिए क्योंकि आटा पीसने या पानी लाने में मुझको सख़्त मशक़्क़त हो रही है, उस वक़्त आपने ये वज़ीफ़ा बतलाया। दूसरी रिवायत में यूँ है कि आपने फ़र्माया सुफ़्फ़ा वाले लोग भूखे हैं, उन ग़ुलामों को बेचकर उनके खिलाने का इंतिज़ाम करूँगा।

١٢ – باب التَّعَوُّذِ وَالْقِرَاءَةِ عِنْدَ الْمَنَامِ

बाब 12 : सोते वक़्त शैतान से पनाह मांगना और तिलावते क़ुर्आन करना

٦٣١٩ – حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، قَالَ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ نَفَثَ فِي يَدَيْهِ وَقَرَأَ بِالْمُعَوِّذَاتِ وَمَسَحَ بِهِمَا جَسَدَهُ. [راجع: ٥٠١٧]

6319. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा ने ख़बर दी और उन्हें उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) लेटते तो अपने हाथों पर फूँकते और मुअ़व्विज़ात पढ़ते और दोनों हाथ अपने जिस्म पर फेरते। (राजेअ़ : 5017)

٦٣٢٠ – حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا

6320. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे